A Daily News Magazine

इंदौर

शनिवार, 06 जुलाई, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 256, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subhahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ब्रिटेन : किएर स्टार्मर के आने से भारत पर क्या असर होगा?

जुबैर अहमद

खेल की ज़ुबान में कहें तो अगर कोई टीम मैच से पहले ही हार मान लेती है, तो इससे समर्थकों का हौसला पूरी तरह टूट जाता है। चार जुलाई को हुए आम चुनाव में ज़बर्दस्त शिकस्त खाने वाली ब्रिटेन की कंज़र्वेटिव पार्टी के करोड़ों समर्थकों के ऊपर ये बात बख़ूबी लागू होती है। कंज़र्वेटिव पार्टी के इन नेताओं का कहना था कि अगर उन्हें पर्याप्त सीटें मिलती हैं, तो वो एक असरदार विपक्ष की भूमिका निभाना चाहेंगे।

सबसे बड़ा सवाल यही है कि कंज़र्वेटिव पार्टी को पिछले कई दशकों की सबसे शर्मनाक पराजय का सामना क्यों करना पड़ा? जानकार इसके पीछे कई कारण बताते हैं। मिडिलसेक्स यूनिवर्सिटी में दक्षिण एशियाई मामलों की जानकार डॉ. नीलम रैना कहती हैं कि, 'कंज़र्वेटिव पार्टी की इतनी बड़ी हार के पीछे एक के बाद एक आए स्कैंडल रहे हैं, जिनकी वजह से लोकतंत्र को चोट पहुंची। इनसे राजनीति पर हमारे विश्वास को चोट पहुंची।'

लंदन स्थित थिंक टैंक चैटम हाउस में एशिया प्रशांत प्रोग्राम में दक्षिण एशियाई मामलों के रिसर्च फेलो डॉ. क्षितिज बाजपेयी मानते हैं कि टोरी या कंज़र्वेटिव पार्टी की शर्मनाक चुनावी शिकस्त की एक बड़ी वजह ये भी थी कि वो पिछले 14 बरस से सरकार चला रहे थे और जनता उनसे ऊब चुकी थी। इस हार के पीछे एक के बाद एक की गईं ग़लतियां और घोटाले रहे। इनमें से ज़्यादातर घोटालों पर से तो हाल के दिनों में ही पर्दा उठा था।

कंज़र्वेटिव पार्टी की सरकार पर कोविड-19 महामारी से निपटने के तौर तरीक़े को लेकर भी सवाल उठे; उस वक़्त के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और उनकी सरकार के मंत्रियों ने लॉकडाउन के नियमों का उल्लंघन किया। विवाद बढ़ा तो, बोरिस जॉनसन की जगह एलिज़ाबेथ ट्रस को प्रधानमंत्री बनाया गया।

लेकिन, उनकी आर्थिक नीतियां इतनी ख़राब थीं कि लिज़ ट्रस केवल 40 दिन प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठ सकीं। इसके बाद भारतीय मूल के पहले ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने सत्ता संभाली। सुनक की सरकार लोगों की आर्थिक तंगहाली, महंगाई और बेरोज़गारी जैसी चुनौतियों से जूझती रही। हाल ही में सट्टेबाज़ी का एक घोटाला भी सामने आया, जिसमें ऋषि सुनक के क़रीबी और उनकी सरकार के सदस्य भी शामिल थे। बोरिस जॉनसन के उलट, लिज़ ट्रस और ऋषि सुनक दोनों को पार्टी ने प्रधानमंत्री पद के लिए चुना था।

वीरेंद्र शर्मा कई बरस तक साउथॉल से लेबर पार्टी के सांसद रह चुके हैं। उनका मानना है कि टोरी पार्टी की अंदरूनी कलह और नेतृत्व में बार-बार किए जाने वाले बदलावों की वजह से उसका ये हाल हुआ है। अपने 14 बरस के राज में टोरियों ने अर्थव्यवस्था को बिगड़ते जाने दिया।

कंज़र्वेटिव पार्टी के तमाम नेता दिल खोलकर किएर स्टार्मर की इस बात के लिए तारीफ़ कर रहे हैं कि उन्होंने लेबर पार्टी को पूरी तरह बदल दिया। टोरी पार्टी के एक वरिष्ठ सांसद ने अगर लेबर पार्टी की कमान अब भी जर्मी कोर्बिन के हाथ में होती, तो वो चुनाव हार जाती। जब जर्मी कोर्बिन लेबर पार्टी के नेता थे, तो भारत उनसे बेहद नाख़ुश था। जर्मी कोर्बिन के नेतृत्व में लेबर पार्टी ने 2019 में अपने सालाना जलसे में एक प्रस्ताव पारित किया था। इस प्रस्ताव में घोषणा की गई थी कि कश्मीर में मानवीय संकट पैदा हो गया है।

तब लेबर पार्टी के नेता किएर स्टार्मर ने सफ़ाई दी थी कि कश्मीर, भारत और पाकिस्तान का आपसी मसला है। हालांकि, तब तक बात बिगड़ चुकी थी। किएर स्टार्मर ने वादा किया है कि वो भारत के साथ रिश्ते सुधारेंगे। लेबर पार्टी के पूर्व सांसद वीरेंद्र शर्मा मानते हैं कि, 'स्टार्मर के राज में भारत और ब्रिटेन के संबंध ख़ूब फलेंगे फूलेंगे।'

पिछली संसद में लेबर पार्टी के छह सांसद भारतीय मूल के थे। इस बार ये तादाद दो गुना बढ़ जाएगी। स्टार्मर एक संतुलित और व्यवहारिक नेता हैं। वो सुनिश्चित करेंगे कि दोनों देशों के रिश्तों में सुधार हो।' लेकिन, चैटम हाउस के क्षितिज वाजपेयी आगाह करते हैं कि भारत और ब्रिटेन के रिश्तों का आगे का सफ़र फिसलन भरा हो सकता है। इसमें लेबर पार्टी का मूल्यों पर आधारित विदेश नीति पर चलने का झुकाव भी शामिल है। ब्रिटेन में भारतीय मूल के लगभग 15 लाख लोग रहते हैं। वहीं, पाकिस्तानी मूल के भी लगभग 12 लाख लोग वहां बसते हैं; इसके अलावा ऐसे संगठन भी ब्रिटेन में सक्रिय हैं, जो भारत की संप्रभुता को चुनौती देते हैं; इन बातों के अलावा विश्व के व्यापक राजनीतिक और भू-राजनीतिक बदलावों का भी भारत और ब्रिटेन के रिश्तों पर उल्टा असर हो सकता है।

डॉ. नीलम रैना को उम्मीद है कि अगर नई सरकार में डेविड लैमी को विदेश मंत्री बनाया जाता है, तो भारत और ब्रिटेन के संबंध काफ़ी बेहतर होंगे। डेविड लैमी को दक्षिणी एशियाई मामलों की अच्छी समझ है। डॉ. क्षितिज वाजपेयी मानते हैं कि किएर स्टार्मर सरकार के राज में ये अपेक्षा की जा सकती है कि, 'भारत और ब्रिटेन के संबंधों में उच्च स्तर की निरंतरता देखने को मिलेगी।'

अगर लेबर पार्टी की सरकार भारत के साथ रिश्ते सुधारने को अपने एजेंडे का हिस्सा बनाती है, तो किएर स्टार्मर के लिए भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर दस्तख़त करना सबसे बड़ी प्राथमिकता होगी। डॉ. क्षितिज वाजपेयी कहते हैं, 'संभावित विदेश मंत्री डेविड लैमी ने संकेत दिया है कि वो जल्दी से जल्दी मुक्त व्यापार समझौते को पूरा करना चाहते हैं और इसके लिए वो जुलाई का महीना ख़त्म होने से पहले ही भारत के दौरे पर जाएंगे। ख़बरों के मुताबिक़ 26 बिंदुओं में से ज़्यादातर पर दोनों देशों में सहमति बन चुकी है।' भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर दस्तख़त की राह में एक बड़ा रोड़ा ब्रिटेन आकर बसने वाले भारतीय कामगारों को वर्क परमिट जारी करने का है। लेबर पार्टी का घोषित लक्ष्य ये है कि वो वैध प्रवासियों की संख्या को कम करेगी और अवैध प्रवासियों को ब्रिटेन में दाख़िल होने से रोकेगी।

ब्रिटेन में रह रहे बहुत से वैध भारतीय प्रवासी आईटी सेक्टर में काम करने वाले पेशेवर हैं। वो वर्क परमिट पर ब्रिटेन में रह रहे हैं और ब्रिटेन के तकनीकी क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। वैसे ब्रिटेन में कुछ अवैध भारतीय प्रवासी भी रहते हैं। अगर किएर स्टार्मर, भारत के साथ अच्छे रिश्ते क़ायम करना चाहते हैं, तो फिर उनको भारत सरकार को ये यक़ीन दिलाना होगा कि वो ज़्यादा व्यवहारिक विदेश नीति पर चलेंगे।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

नीट पीजी परीक्षा की नई तारीख का ऐलान

दो शिफ्ट में होगा इम्तिहान, बोर्ड ने दी जानकारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन इन मेडिकल साइंसेज ने नीट-पीजी 2024 परीक्षा की नई तारीख का ऐलान कर दिया है। बोर्ड के मुताबिक परीक्षा 11 अगस्त को आयोजित की जाएगी। पहले यह परीक्षा 23 जून को होने वाली थी। अधिकारियों ने कुछ चिंताओं का हवाला देकर इसे 22 जून की रात को रद्द कर दिया था। पेपर लीक से जुड़े मुद्दे पर हंगामे के बीच परीक्षा की तारीखों का ऐलान छात्रों के लिए राहत की खबर है। ताजा अपडेट के मुताबिक नीट-पीजी 2024 परीक्षा अब 11 अगस्त 2024 को दो शिफ्ट में आयोजित की जाएगी। नीट दो शिफ्ट के शेड्यूल के बारे में ज्यादा जानकारी जल्द साझा करेगा। जिसे आप बोर्ड की वेबसाइट से हासिल कर सकते हैं। नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन फॉर मेडिकल साइंसेज ने नीट-

पीजी एग्जाम के पैटर्न में बदलाव किया है। एग्जाम में 200 एमसीक्यू टाइप सवाल पूछे जाते हैं। अब हर सवाल को सॉल्व करने के लिए कुछ मिनटों का फिक्स टाइम ही मिलेगा। इसका मतलब ये है कि किसी सवाल को सॉल्व करने के लिए कोई कैंडीडेट कितना समय दे सकता है ये पहले से ऑटोमैटिक मोड पर सेट होगा। 2024 से ही नए पैटर्न पर एग्जाम होगा।

सुप्रभात

बरसने की उम्मीद लिए
उतावला बादल दौड़ रहा है
बिजली उसके पीछे
फटकार लगाती मां जैसी
लगती है
अरे ठहर!
हर बार बस
उधर ही उधर
इधर कौन बरसेगा फिर
देखो कैसे निरीह नजर
ताक रहें वो किसान
हमारी ओर टुकुर-टुकुर
बादल कहां सुनता है
उसके अंदर अभी सत्ता है।

- विवेक मृदुल

'सुप्रीम' टिप्पणी, अपराधी पैदा नहीं होते, बनाए जाते हैं

कहा-हर संत का अतीत होता है और पापी का भविष्य

जाली नोटों की तस्करी मामले में बोले सुप्रीम जस्टिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा कि अपराधी पैदा नहीं होते, बल्कि बनाए जाते हैं। कोर्ट ने यह कमेंट 3 जुलाई को किया। मामले की सुनवाई जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां ने की। साल 2020 का ये मामला नकली नोटों की तस्करी से जुड़ा हुआ है। एनआईए ने फरवरी 2020 में 1193 नकली नोटों (इंडियन करेंसी) के साथ एक युवक को हिरासत में लिया था। एजेंसी ने दावा था कि इन नकली नोटों को

तस्करी के जरिए पाकिस्तान से मुंबई लाया गया था। बीते 4 साल से युवक एनआईए की हिरासत में है। 5 फरवरी 2024 को उसने मुंबई हाईकोर्ट में जमानत याचिका लगाई थी, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया था। इसके बाद युवक ने सुप्रीम कोर्ट में हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती दी थी। कोर्ट ने कहा कि हर संत का अतीत होता है और पापी (अपराधी) का भविष्य।

भोपाल में आज रोपे जाएंगे 12 लाख पौधे

जंबूरी मैदान में सीएम डॉ. यादव रोपेंगे पौधा; सबसे ज्यादा साढ़े 9 लाख वन विभाग लगाएगा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में हरियाली महोत्सव पर शनिवार को 12 लाख पौधे रोपे जाएंगे। इस दिन जंबूरी मैदान के सामने मेगा इवेंट होगा। जिसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी शामिल होंगे और पौधे लगाएंगे। सबसे ज्यादा साढ़े 9 लाख पौधे वन विभाग रोपेगा।

आज, 6 जुलाई को पूरे प्रदेश में बड़े स्तर पर पौधारोपण होगा। भोपाल में एक दिन में 12 लाख पौधे लगेंगे। यह दिन डॉ. श्यामाप्रसाद जी मुखर्जी की जयंती का है। डीएफओ आलोक पाठक ने बताया कि वन विभाग ज्यादातर पौधे जंगल में लगाएगा। आम, नीम, बरगद, पीपल आदि किस्म के पौधे लगाएंगे। नगर निगम में एक लाख 20 हजार पौधों का रोपण किया जाएगा।

पौधारोपण से व्यापारी समेत हर वर्ग को जोड़ा

कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने बताया, पौधारोपण अभियान से सामाजिक संगठन, शैक्षणिक संस्थाएं और व्यापारियों समेत आमजनों को भी जोड़ा गया है। नगर निगम, वन विभाग और जिला पंचायत सबसे ज्यादा पौधे लगाएगा। पौधे लगाने के बाद नागरिक अपनी फोटो 'मेरी लाइफ पोर्टल' में भी अपलोड कर सकेंगे।

सीएम भी रोपेंगे पौधे

भोपाल में मुख्य कार्यक्रम सुबह साढ़े 8 बजे जंबूरी मैदान के सामने होगा। यहां पर सीएम डॉ. यादव भी पौधे लगाएंगे। पहले यह कार्यक्रम कलियासोत ग्राउंड पर होना था, लेकिन तेज बारिश की वजह से मैदान में कीचड़ हो गया। इस कारण अब यह जंबूरी मैदान के सामने हो रहा है।

इन जगहों पर रोपे जाएंगे पौधे

जंबूरी ग्राउंड के आसपास, कलियासोत ग्राउंड, भेल दशहरा मैदान, एयरपोर्ट रोड, गांधी नगर समेत उन जगहों पर पौधे रोपे जाने का प्लान है, जहां हरियाली कम है। कॉलोनियों में भी पौधों का रोपण किया जाएगा। इसके लिए एसडीएम और तहसीलदारों को भी जवाबदारी दी गई है। इस कार्यक्रम से आमजनों को भी जोड़ा जाएगा।

165 नई अमृत भारत ट्रेनें चलाने की तैयारी में रेलवे

- 130 की रफ्तार, पुश-पुल तकनीक से लबरेज, नए डिजाइन के होंगे कोच

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार पुश-पुल तकनीक की 165 अमृत भारत ट्रेन चलाने जा रही है। इनमें स्लीपर व जनरल कोच होंगे। मेल-एक्सप्रेस ट्रेन में भी भारी संख्या में स्लीपर व जनरल श्रेणी के कोच लगाने की तैयारी है। रेलवे बोर्ड ने गुरुवार को वित्तीय वर्ष 2024-25 व 2025-26 में लगभग 10,000 स्लीपर व जनरल श्रेणी के कोच उत्पादन योजना को मंजूरी दे दी है। 2024-25 में 4485 जनरल कोच व स्लीपर कोच का उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। जबकि अगले वित्तीय वर्ष में इसकी संख्या बढ़ाकर 5,444 की गई है। रेलवे बोर्ड के अधिकारी ने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में अमृत भारत के 1181 जनरल व स्लीपर कोचों का उत्पादन किया जाएगा। इसके अलावा 55 अमृत भारत पेंट्रीकार बनाई जाएंगी।

सरकार से लेकर संगठन तक में होंगे बड़े बदलाव

• चुनावी नुकसान पर मंथन के बाद बीजेपी करेगी डैमेज कंट्रोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों में कुछ राज्यों में बीजेपी का प्रदर्शन उम्मीद से विपरीत बेहद ही खराब रहा है, जिसमें यूपी से लेकर हरियाणा, राजस्थान और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य शामिल है। ऐसे में पार्टी ने कई राज्यों में समीक्षा बैठक की है। इसमें सांसदों और विधायकों के खिलाफ कार्यकर्ताओं ने जमकर विरोध किया है। इसके अलावा सगंठन के तौर पर तरीकों से लेकर टिकट बंटवारे को लेकर भी कार्यकर्ताओं ने नाराजगी जताई है। ऐसे में बीजेपी इन सारे मुद्दों को संज्ञान में ले रही है। जानकारी के मुताबिक बीजेपी की समीक्षा बैठक में दूसरे दलों से आए नेताओं को जरूरत से ज्यादा तरजीह देना और मूल काडर की नाराजगी भी एक बड़ी वजह बन गई है। ऐसे में अब संभावनाएं है कि जल्द ही पार्टी के अंदर बड़े बदलाव हो सकते हैं। बता दें कि इस बार बीजेपी को 63 सीटों का नुकसान हुआ है और पार्टी को बहुमत के लिए गठबंधन के सहयोगियों तक की जरूरत पड़ गई है। नुकसान यूपी में हुआ, जहां पार्टी को वोट प्रतिशत 49.98 से घटकर 41.37 प्रतिशत पर आ गया था।

यूपी में बीजेपी को हुए नुकसान को लेकर हुई समीक्षा बैठक में पार्टी के नेताओं ने राज्य से लेकर केंद्र तक की खामियां गिना दी है।

इतना ही नहीं नेताओं ने आग्रह किया है कि नुकसान के लिए जिम्मेदार उन सभी बिंदुओं पर तत्काल निर्णय लिए जाएं। यूपी के नेताओं ने चुनाव में नुकसान को लेकर कहा कि अगर इन मुद्दों को अभी हल नहीं किया गया तो 2027 के विधानसभा चुनाव में पार्टी की स्थिति यूपी में खराब हो सकती है।

नेताओं ने मांग की है कि दूसरे दलों से आने वाले नेताओं को तरजीह दी जाए लेकिन अपने नेताओं को नजरंदाज न किया जाए। ध्यान देने वाली बात यह भी है कि यूपी के कोटे से मोदी सरकार में जिन 11 नेताओं को मंत्री पद दिया गया है, उनमें से मूल काडर के नेता केवल तीन ही हैं। सूत्रों का यह भी कहना है कि अभी कार्यकर्ताओं में शिथिलता आ सकती है।

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

मैं सिर्फ 18 महीने मंत्री रहा, विभाग के पास पैसे भी नहीं थे

● पुल गिरने पर जेडीयू ने घेरा तो तेजस्वी यादव ने दी सफाई

पटना (एजेंसी)। बिहार में पुल गिरने के मुद्दे पर राजनीतिक घमासान मचा हुआ है। भारतीय जनता पार्टी और जनता दल यूनाइटेड पुल गिरने को लेकर राष्ट्रीय जनता दल नेता तेजस्वी यादव को घेर रहे हैं। शुक्रवार को तेजस्वी यादव ने सफाई देते हुए जेडीयू और बीजेपी के आरोपों पर पलटवार किया है। तेजस्वी ने नीतिश सरकार पर सवाल उठाते हुए कहा कि वे केवल 18 महीने ही संबंधित विभाग के मंत्री रहे हैं। बता दें, बिहार में अब तक 12 पुल टूट चुके हैं। तेजस्वी यादव ने कहा, बिहार में डबल इंजन का अद्भुत खेल है, एक इंजन भ्रष्टाचार में लगा हुआ है और एक इंजन अपराध में लगा हुआ है।

लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस-एएपी की राहें जुदा

● हरियाणा और दिल्ली में अब अलग-अलग लड़ेंगे चुनाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस को हराकर दिल्ली की सत्ता में आई आम आदमी पार्टी ने भले लोकसभा चुनावों के मद्देनजर दिल्ली सहित कुछ राज्यों में हाथ मिलाते हुए साथ लड़ने का फैसला किया था, लेकिन लोकसभा के बाद आगामी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस और आप साथ नहीं जाएगी। हालांकि पंजाब में दोनों ने लोकसभा में भी अलग-अलग चुनाव लड़ा था। आप की ओर से कांग्रेस के साथ गठबंधन की बात पहले ही आ चुकी है, लेकिन अब कांग्रेस भी इस बात की तस्दीक कर रही है।

इंजीनियर राशिद और अमृतपाल ने सांसद पद की ली शपथ

● दोनों पैरोल पर तिहाड़-डिब्रूगढ़ जेल से निकले

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद कश्मीरी नेता शेख अब्दुल राशिद और असम की डिब्रूगढ़ जेल में बंद खालिस्तान समर्थक अमृतपाल सिंह ने शुक्रवार को सांसद पद की शपथ ली। दोनों आज पैरोल पर बाहर आए और संसद भवन में शपथ ली। 56 साल के इंजीनियर राशिद को शपथ लेने के लिए तिहाड़ जेल से दो घंटे की पैरोल मिली थी। वहीं, 31 साल के अमृतपाल सिंह को 4 दिन की पैरोल मिली है। राशिद को परिवार से मुलाकात के बाद वापस तिहाड़ ले जाया गया। अमृतपाल को भी परिवार से मुलाकात के बाद असम ले जाया जाएगा।

अयोध्या राम मंदिर में 25 और मूर्तियां लगेंगी

● शेषावतार, सप्तऋषि और तुलसीदास की मूर्ति शामिल ● दिसंबर तक मंदिर निर्माण पूरा करने की कोशिश जारी

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या के रामलला मंदिर में 25 और मूर्तियां लगेंगी। इसमें श्रीराम दरबार, सप्तऋषि, शेषावतार और कुछ अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां शामिल हैं। ये मूर्तियां फर्स्ट फ्लोर पर स्थापित की जाएंगी। रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की एक बड़ी मूर्ति भी लगाई जाएगी, हालांकि इसका स्थान अभी तय नहीं है। ये जानकारी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने दी। शुक्रवार को उन्होंने बताया- राम मंदिर 221 फीट ऊंचा होगा। मंदिर का मुख्य शिखर 161 फीट ऊंचा होगा। इस पर 50 मीटर ऊंचा ध्वज दंड लगेगा। यह दंड गुजरात से तीन महीने पहले अयोध्या लाया गया है। ट्रस्ट की कोशिश है कि राम मंदिर दिसंबर, 2024 तक बनकर तैयार हो जाए। साथ में पूरे मंदिर परिसर का निर्माण 2025 के अंत तक पूरा कर लिया जाए। चंपत राय के अनुसार, राम मंदिर का निर्माण का काम तेजी से चल रहा है। निर्माण में अब तक तीन लाख घन फीट पत्थर का इस्तेमाल हो चुका है। करीब सवा लाख घन फीट पत्थर अभी और लगेंगे। मंदिर निर्माण में बरसात से कितनी बाधा आ सकती है, निर्माण तेज करने के लिए कितने मजदूरों की जरूरत पड़ेगी। इस पर आज भवन निर्माण समिति की बैठक में मंथन हो रहा है। चंपत राय से सवाल पूछा गया कि रामलला के शेष दो मूर्तियां कहां स्थापित होंगी। जवाब में उन्होंने कहा- वो ट्रस्ट की संपत्ति है।

तय समय पर पूरा हो निर्माण मंदिर ट्रस्ट कर रहा मंथन

मंदिर ट्रस्ट के सदस्य डॉक्टर अनिल मिश्र ने बताया- राम मंदिर का निर्माण समय से और गुणवत्ता के साथ हो रहा है। इससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो, हम इसका हमेशा ध्यान रखते हैं। रोज इसकी समीक्षा की जाती है। राम मंदिर का ग्राउंड फ्लोर 90 फीसदी बन गया है। सेकेंड फ्लोर का काम भी 70 फीसदी पूरा हो चुका है। सेकेंड फ्लोर पर 74 स्तंभों में से 60 स्तंभ स्थापित किए जा चुके हैं। परिसर में 800 मीटर लंबा परकोटा भी बन रहा है। परकोटे में छह मंदिरों का भी निर्माण कार्य चल रहा है। इसके अलावा परिसर में सप्त मंडपम की भी स्थापना की जा रही है। श्रद्धालुओं के लिए तीर्थ यात्री सुविधा केंद्र का काम पूरा हो गया है। यहां 25 हजार श्रद्धालु बैठ सकेंगे। 22 जनवरी को राम मंदिर का उद्घाटन हुआ था।

एचपीसीएल ने वॉकथॉन और मानव श्रृंखला रैली के साथ स्वच्छता पखवाड़ा का शुभारंभ किया

मुंबई। हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) ने 1 से 15 जुलाई 2024 तक आयोजित होने वाले स्वच्छता पखवाड़े का शुभारंभ कर स्वच्छ भारत अभियान में योगदान देने हेतु एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस पहल का उद्देश्य सफाई और स्वच्छता के बारे में व्यापक जागरूकता बढ़ाना तथा समुदाय, विशेषकर युवाओं को इसमें शामिल करना है। इस स्वच्छता पखवाड़ा का शुभारंभ मुंबई के चर्चगेट स्थित प्रतिष्ठित मरीन ड्राइव पर एक ऊर्जस्वी वॉकथॉन और मानव श्रृंखला रैली के साथ हुआ। श्री एस. भरतन, निदेशक-रिफाइनरीज़ एवं श्री के.एस. शेट्टी, निदेशक-मानव संसाधन ने स्वच्छ भारत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए एचपीसीएल कर्मचारियों और महाविद्यालय के छात्रों को स्वच्छता शपथ दिलाकर अभियान का उद्घाटन किया।

वॉकथॉन में 150 से ज्यादा उत्साहशील कर्मचारियों और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवकों ने प्रतिभागिता की एवं स्वच्छता और स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डालने वाले द्विभाषी नारे लगाए। इस कार्यक्रम का समापन मरीन ड्राइव के तट पर मानव श्रृंखला के निर्माण के साथ हुआ जो मुंबई को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने में एकता एवं सामूहिक प्रयास का प्रतीक है। एचपीसीएल के वरिष्ठ अधिकारियों ने वॉकथॉन की शुरुआत, प्रतिभागियों को प्रोत्साहन और समर्थन पूर्ण शब्दों से की। उनकी उपस्थिति ने सामुदायिक सहभागिताएवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति कॉर्पोरेशन की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

एचपीसीएल स्वच्छता पखवाड़ा के पश्चात भी सतत प्रयासों और समुदाय-संचालित पहलों के माध्यम से स्वच्छ भारत अभियान को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की छात्रा सोनिका का एनएसडी में चयन

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रथम बैच 2021-2023 की छात्रा सोनिका नामदेव का चयन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली में हो गया है। सोनिका ने रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से एम.ए. इन ड्रामाटिक्स किया था। वे मूलतः टीकमगढ़ की रहने वाली हैं। टैगोर नाट्य विद्यालय में रहते हुए उन्होंने बहुत ही लगन एवं मेहनत के साथ अपना प्रशिक्षण पूरा किया था। इस दौरान उन्होंने नाटक विसर्जन, अधांतर, लोअर डैप्थ्स, माटीगाड़ी, कविताओं का रंगमंच, दिक्षणी, और रावुत्री जैसे नाटकों में महत्वपूर्ण भूमिकाएं कीं। साथ ही यहां कलरीपायट्टू, कत्थकली, छाउ एवं अन्य प्रशिक्षण कार्यशालाओं में भी सक्रिय भागीदारी की। सोनिका की इस उपलब्धि पर रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे, प्रो-चांसलर डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, कुलपति प्रो. रजनी कांत, कुलसचिव डॉ. विजय सिंह, प्रो वाइस चांसलर डॉ. संगीता जौहरी एवं नाट्य विद्यालय के निदेशक मनोज नायर ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान की है।

ज्ञात हो कि टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का सांस्कृतिक उपक्रम है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे के मार्गदर्शन में प्रदर्शनकारी कलाओं एवं रंगमंच में युवाओं का रुझान बढ़ाने एवं उसे उद्यमिता के रूप में लिया जाए इसलिए, नाट्य विद्यालय की स्थापना की गई। जहां पीजी डिप्लोमा इन ड्रामेटिक आर्ट्स और एमए इन ड्रामेटिक्स कराई जाती है।

जीत के बाद रुकना नहीं चाहते हैं राहुल गांधी

● हाथरस में पीड़ितों से मिलकर दे दिया है बड़ा संदेश ● अलीगढ़ के एक गांव में भी पीड़ितों से की मुलाकात

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की नई भूमिका के बाद से राहुल गांधी के तेवर बदले-बदले से हैं। एकदम आक्रामक। मोदी सरकार पर उनके हमलों में एक अलग ही धार दिख रही। पेपरलीक, अग्निवीर, महंगाई जैसे युवाओं और आम लोगों से जुड़े मुद्दों पर वह लगातार सरकार को घेर रहे हैं। संसद में उनका बेहद आक्रामक तेवर दिखा। ये बात अलग है कि सरकार उन पर भ्रामक दावों के जरिए जनता को गुमराह करने का आरोप लगा रही है। लोकसभा चुनाव के नतीजों से उत्साहित राहुल गांधी रुकना नहीं चाहते। शुक्रवार सुबह-सुबह वह हाथरस के लिए रवाना हो गए। रास्ते में अलीगढ़ के पिलखना गांव में पहुंचकर हाथरस भगदड़ में मारे गए लोगों के परिजनों से मुलाकात की। उनके जख्मों पर मरहम लगाने की कोशिश की। उसके बाद वह हाथरस पहुंचे और पीड़ित परिवारों से उनका दर्द जाना। हाथरस में राहुल गांधी का एक अलग ही अवतार सामने आया। एक संवेदनशील राजनेता की। एक ऐसे नेता की जिसे अपने बीच पाकर पीड़ित उसके कंधे पर सिर रखकर बेजार रो सकें। एक ऐसा नेता जिससे गले लिपटकर अपना गम सुना सकें।

'भोले बाबा' की तलाश में आश्रम पहुंची एसआईटी

लग्जरी गाड़ियां ले गई साथ, मधुकर के लिए छापेमारी

मैनपुरी (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के हाथरस में 121 लोगों की भगदड़ में मौत के मामले में एजेंसियों ने मुख्य आरोपी देवप्रकाश मधुकर को पकड़ने के लिए पड़ोसी राज्यों राजस्थान और हरियाणा में छापेमारी शुरू कर दी है। इसके साथ ही शासन के निर्देश पर बनी एसआईटी ने बाबा के मैनपुरी आश्रम पहुंची है। यहां खड़ी दो लग्जरी गाड़ियां पुलिस अपने साथ ले गई है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि तमाम एजेंसियां पूछताछ के लिए प्रवचनकर्ता सूरजपाल उर्फ नारायण साकार हरि उर्फ भोले बाबा की भी तलाश कर रही हैं। हाथरस जिले के फुलराई गांव में दो जुलाई को 'भोले बाबा' के सत्संग के बाद मची भगदड़ में कुल 121 लोगों की मौत हो गई थी, जिसमें अधिकतर महिलाएं थीं। इस मामले में दर्ज प्राथमिकी में नामजद आरोपी के तौर पर सिर्फ मुख्य सेवादार मधुकर का नाम है और सूरजपाल का नाम दर्ज नहीं किया गया है। यह प्राथमिकी हाथरस के सिकंदराराऊ पुलिस थाने में दर्ज की गई जिसमें मधुकर के अलावा कई अज्ञात आयोजकों को भी आरोपी बनाया गया और मामले में अब तक छह संदिग्धों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

ब्रिटेन में सुनक हारे, कीर स्टार्मर बने नए पीएम

200 साल में कंजर्वेटिव पार्टी की सबसे बड़ी हार

हार के बाद सुनक ने किंग चार्ल्स को सौंपा इस्तीफा

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन में लेबर पार्टी ने 14 साल बाद सत्ता में वापसी कर ली है। 5 जुलाई (शुक्रवार) को आए नतीजों में पार्टी ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है। उसे 650 में से अब तक 410 सीटें मिली हैं। 3 सीटों पर नतीजे आने बाकी हैं। ब्रिटेन में सरकार बनाने के लिए 326 सीटों की जरूरत होती है। एजेंसी के मुताबिक, चुनाव के दौरान लेबर पार्टी को लीड करने वाले सर कीर स्टार्मर ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बन गए हैं। वहीं 2022 से कंजर्वेटिव पार्टी का नेतृत्व कर रहे ऋषि सुनक को अब तक सिर्फ 119 सीटें मिली हैं। सुनक ने हार स्वीकार कर पार्टी से माफी मांगी है। उन्होंने स्टार्मर को भी फोन कर जीत की बधाई दी। सुनक और स्टार्मर दोनों ने अपनी-अपनी सीटों पर जीत हासिल की है।

पंजाब में निहंगों ने शिवसेना नेता को तलवारों से काटा

● गनमैन की रिवॉल्वर छीनी, हिंदू नेताओं ने सड़क जाम की, माहौल तनावपूर्ण

लुधियाना (एजेंसी)। पंजाब के लुधियाना में शुक्रवार दोपहर को शिवसेना टकसाली नेता एवं सुखदेव थापर के वंशज संदीप थापर पर सिविल अस्पताल के बाहर 3 निहंगों ने हमला कर दिया। निहंगों ने बीच सड़क उन पर तलवारों से वार किए। हमले के वक्त गनमैन संदीप के साथ मौजूद था। उसके पास रिवॉल्वर थी, लेकिन निहंगों ने उसे छीन लिया। हमला करने के बाद निहंग संदीप की ही स्कूटी लेकर फरार हो गए। इसके बाद संदीप को सिविल अस्पताल ले जाया गया। जहां गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें सीएमसी में भर्ती कराया गया। वहीं इस घटना के बाद हिंदू नेता भड़क गए और सड़क जाम कर दी।

महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे का शुरू हुआ 'ऑपरेशन मशाल'

औरंगाबाद में बीजेपी छोड़ेंगे 10 पार्षद, दो विधायकों की बढ़ी टेंशन

मुंबई (एजेंसी)। लोकसभा चुनावों में बीजेपी को बड़ा झटका देने के बाद अब उद्धव ठाकरे छत्रपति संभाजीनगर में बड़ा खेला करने जा रहे हैं। संभाजीनगर में रविवार को आयोजित होने वाले शिव संकल्प मेले में बीजेपी के आठ नगरसेवक (पार्षद) पाला बदलकर शिवसेना यूबीटी में शामिल हो सकते हैं। अगर ऐसा होता है तो बीजेपी के लिए यह बड़ा झटका होगा। पूर्व डिप्टी मेयर राजू शिंदे समेत आठ नगरसेवक शिवसेना यूबीटी में जाने की अटकलों ने राज्य की सियासत गर्मा दी है। कुछ दिन पहले पूर्व मंत्री सूर्यकांता पाटिल ने बीजेपी को छोड़कर एनसीपी (शरद पवार) में घर वापसी की कर ली थी। मराठी मीडिया से बातचीत में राजू शिंदे ने इस खबर की पुष्टि की है कि वह बीजेपी छोड़ रहे हैं। शिंदे कहा कहना है कि उनके साथ 5 से 6 पार्षदों के साथ बीजेपी छोड़ रहे हैं। कार्यकर्ताओं को लगता है कि बीजेपी में रहकर उनकी समस्याएं हल नहीं होंगी। मैं महापौर, नगर अध्यक्ष बन सकता था लेकिन नहीं बना।

तेलंगाना में टीचर का ट्रांसफर, 133 बच्चों ने स्कूल छोड़ा

मौजूदा स्कूल से 3 किमी दूर उसी जगह एडमीशन लिया जहां टीचर गए

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के मंचेरियल में पोनक्कल के प्राइमरी स्कूल टीचर का ट्रांसफर हुआ, लेकिन यह बात उनके स्टूडेंट्स को बर्दाश्त नहीं हुई। इसलिए 133 स्टूडेंट्स ने वह स्कूल ही छोड़ दिया और सभी ने अक्कापेल्ली गुडा के उसी स्कूल में एडमीशन ले लिया है, जहां उनके टीचर का ट्रांसफर किया गया था। बच्चों के चहेते ये टीचर जाजला श्रीनिवास हैं। वे 2012 से पोनक्कल प्राइमरी स्कूल में पढ़ा रहे थे। 1 जुलाई को ही श्रीनिवास का ट्रांसफर हुआ है। अक्कापेल्ली स्कूल में 30 जून को महज 21 छात्र थे। अब इनकी संख्या बढ़कर 154 हो गई है।

हालांकि, श्रीनिवास यहां अकेले टीचर हैं। जाजला श्रीनिवास जुलाई 2012 में जन्नाराम मंडल के इस स्कूल आए थे। तब यहां केवल 5 कक्षाएं, 2 टीचर और केवल 32 स्टूडेंट्स थे। श्रीनिवास के खेल-खेल में पढ़ाने के पैटर्न के चलते गांव के लोगों ने अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में पढ़ाने का फैसला किया। 133 बच्चों के स्कूल छोड़ने से पहले यहां 250 बच्चे थे। टीजीपल्ली, गोंडगुडा, कामनपल्ली, किश्तपुर, इंदनपल्ली, गांधीनगर, जुविगुडा और जन्नाराम गांवों से छात्र ऑटो में स्कूल में पढ़ने जा रहे हैं। यह स्कूल उनके पिछले स्कूल से 3 किमी दूर है। जाजला ने इस स्कूल में बच्चों पर बहुत मेहनत की। उन्होंने अपने बाकी टीचर्स के साथ मिलकर बेस्ट रिजल्ट दिए।

इंफाल में निर्माणाधीन धार्मिक स्थल पर गोलीबारी

यहां केंद्रीय बलों की टीम तैनात थी, आधी रात की घटना

इम्फाल (एजेंसी)। मणिपुर के इंफाल में गुरुवार-शुक्रवार की रात उपद्रवियों ने एक निर्माणाधीन धार्मिक स्थल को निशाना बनाया। पैलेस कंपाउंड में देर रात करीब 12.30 बजे हमलावरों ने धार्मिक स्थल फायरिंग की। अभी घटना में शामिल लोगों की अभी पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस ने बताया कि जिस धार्मिक स्थल पर गोलीबारी हुई, केंद्रीय बलों की एक टीम उसकी सुरक्षा में तैनात थी। राहत की बात रही कि हमले में किसी जवान को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। घटना के बाद इलाके में सुरक्षा और कड़ी कर दी गई है। पीएम नरेंद्र मोदी ने बुधवार को ही राज्यसभा में कहा था कि मणिपुर में हिंसा लगातार कम हो रही है। केंद्र और राज्य सरकार पूरी तरह शांति स्थापित करने की कोशिश कर रही है। 11,000 से ज्यादा एफआईआर दर्ज की गई हैं।

हाई कोर्ट ने कहा-नोटिफिकेशन में याचिकाकर्ताओं की जमीन शामिल की जाए

इंदौर (नप्र)। हाई कोर्ट की डिविजन बेंच ने इंदौर विकास प्राधिकरण की टाउन एंड कंट्री प्लानिंग स्कीम-4 का रास्ता साफ कर दिया है। डिविजन बेंच ने इस स्कीम के लिए नोटिफिकेशन जारी करने के आदेश जारी किए हैं। कोर्ट ने यह भी कहा कि याचिकाकर्ता की जमीन भी नोटिफिकेशन में शामिल की जाए, लेकिन इस जमीन पर किसी तरह का निर्माण तब तक नहीं किया जाए, जब तक कोर्ट इस मामले में अंतिम फैसला जारी नहीं कर देती। जस्टिस विजय कुमार शुक्ला, जस्टिस हृदयेश की डिविजन बेंच ने फैसला जारी किया है। कुल 78.989 हेक्टेयर जमीन पर टीपीएस-4 जारी की गई थी। इस योजना में जमीन अधिग्रहण किए जाने के बाद पांच जमीन मालिकों ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर योजना पर स्थगन ले लिया था। कुल 3.204 हेक्टेयर जमीन याचिकाकर्ताओं की योजना में शामिल है। जमीन मालिकों का कहना है पूर्व में भी आईडीए ने स्कीम जारी की थी और जमीन अधिग्रहण किया था। बाद में योजना निरस्त हुई और फिर टीपीएस-4 के रूप में जारी कर दी।

इंदौर में बैंककर्मी युवती से लिव-इन पार्टनर में संबंध बनाता रहा

इंदौर (नप्र)। इंदौर के तिलक नगर में किराए से रहने वाली 25 साल की बैंक में आईटी टेक्नीशियन युवती ने लिव-इन पार्टनर और उसके पिता के खिलाफ रेप और धमकाने का केस दर्ज कराया। युवती ने पुलिस को बताया कि आरोपी ने उसके पिता को रोका और शादी नहीं करने दी।
इसके बाद दोस्त के पिता से बात की तो वह इंदौर में ही हत्या की धमकी देने लगे। जावद में जहां भाई-बहन रहते हैं, उन्हें उठवा कर हाथ पैर तोड़ने की बात करने लगे। आखिर में परेशान होकर पुलिस की मदद लेना पड़ी।
तिलक नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक युवती ने गौरव सोनी और उसके पिता राजेश सोनी, निवासी रैन गली, लक्ष्मी चौक जावद के खिलाफ केस दर्ज कराया है। पीड़िता ने बताया कि वह मूल रूप से जावद की रहने वाली है और 2018 से इंदौर में रहती है।
पिछले तीन साल से तिलक नगर में रह रही है। आरोपी गौरव सोनी भी जावद का रहने वाला है, इसलिए उससे पहले से जान-पहचान थी। गौरव से मोबाइल पर बात होती रहती थी। कभी-कभी दोनों मिलते भी थे। कुछ समय बाद गौरव ने उससे प्यार का इजहार करते हुए शादी करने की इच्छा जताई। पीड़िता ने बताया कि वह भी गौरव को पंसद करने लगी थी। इसलिए गौरव की बात पर विश्वास कर उसे हां कह दिया।

कोचिंग स्टूडेंट्स को फूड पॉयजनिंग; 70 तक पहुंची संख्या

इंदौर (नप्र)। इंदौर में नवलखा स्थित फिजिकल एकेडमी के स्टूडेंट्स के फूड पॉयजनिंग मामले में संख्या बढ़ती ही जा रही है। अलग-अलग दौर में अन्य स्टूडेंट्स को अस्पताल में एडमिट कराया। शुक्रवार को भी 8 स्टूडेंट एडिमट हुए। इस तरह संख्या 70 हो गई है। कई स्टूडेंट्स में हैजे के लक्षण मिले हैं। इस बीच जिला प्रशासन ने भंवरकुआ, चितावद, पालदा, मल्हारगंज सहित 40 से ज्यादा स्थानों पर सैंपलिंग तेज कर दी है। शुरुआती दौर में पानी दूषित होने की बात सामने आई है।
अभी जिन स्टूडेंट्स को एमवाय अस्पताल में एडमिट किया है उनका कहना है कि उन्होंने बाहर से अलग-अलग स्थानों पर भोजन किया था। ऐसे में माना जा रहा है कि दूषित पानी से ये स्टूडेंट्स बीमार पड़े हैं। हालांकि प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग ने इसकी पुष्टि नहीं की है लेकिन सैंपलिंग लगातार की जा रही है। अभी इनकी रिपोर्ट नहीं आई है।

किराना दुकान में लगाई आग

इंदौर (नप्र)। इंदौर के बाणगंगा इलाके में एक मोपेड से आकर दो बदमाशों ने एक किराना दुकान में आग लगा दी। पड़ोसी ने दुकान मालिक को आवाज लगाई। आग पर काबू पा लिया। दुकान मालिक ने सीसीटीवी देखे तो उसमें दो युवक आग लगाकर जाते हुए दिखे। इसके बाद पुलिस ने दोनो पर केस दर्ज कर लिया। बाणगंगा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक लखन पुत्र तुलसीराम की शिकायत पर राज उर्फ भारत ओर उसके साथी को आरोपी बनाया गया है। लखन ने बताया कि वह घर के नीचे किराना दुकान संचालित करता है। रात में वह दुकान बंद करके उपर कमरे में चले गया। पडोसी सुधीर ने रात करीब 12:30 बजे आवाज लगाई कि दुकान में आग लगी है। इसके बाद तुंरत शटर खोला आग आगे की तरफ फैली थी। उस पर कुछ देर में काबू कर लिया। बाद में शंका होने पर सीसीटीवी कैमरो की रिकार्डिंग देखी। जिसमें राज ओर उसका साथी मोपेड से आया ओर बोतल से शटर के नीचे ज्वलनशील पदार्थ डालकर दुकान में आग लगाकर चले गया। बाद में शटर के अंदर से धुआ निकलने लगा। पुलिस ने मामले में कारवाई की है।

इंदौर में शॉप मालिक के बेटे पर केस

इंदौर (नप्र)। आजाद नगर में मार्च 2024 में एक युवती ने सुसाइड कर लिया था। इस मामले में पुलिस ने जांच के बाद उसकी बहन के बयान मे आधार पर दुकान मालिक के बेटे को आरोपी बनाया है।
आजाद नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक विराट नगर में रहने वाली अंजलि (23) पुत्री बलीराम शिंदे ने जहर खाकर जान दे दी। इस मामले में पुलिस ने जांच के बाद दीपक उर्फ सोनू पुत्र ठाकुर दास ममतानी, निवासी रानीपुरा पर आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले में केस दर्ज किया है।जांच में सामने आया कि अंजलि वहां काम करती थी। दीपक से उसकी दोस्ती थी। बाद में दीपक उसे परेशान करने लगा। उसके मोबाइल की जांच में भी यह बात सामने आई।

इंदौर के आश्रम का पानी पीने क्या नहाने लायक भी नहीं, पानी में मिला कॉलीफॉर्म बैक्टीरिया

15 दिनों से टैंकर का पानी पी रहे थे बच्चे

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के रामचंद्र नगर स्थित मानसिक दिव्यांग युग पुरुष धाम आश्रम में गुरुवार देर रात तक बीमार बच्चों की संख्या बढ़कर 60 पर पहुंच गई है। वहीं गुरुवार को 12 बच्चों के स्वस्थ में सुधार होने पर डिस्चार्ज कर दिया गया है। इन बच्चों को जिला प्रशासन ने अपनी कस्टडी में लेकर अन्य स्थान पर रेफर किया है। अभी 48 बच्चों का चाचा नेहरु अस्पताल में इलाज चल रहा है। इनमें से तीन बच्चे आईसीयू में हैं।

पूरी घटना के बाद यह बात भी सामने आई संस्था के परिसर का बोरिंग खराब होने से करीब दो हफ्ते तक टैंकर के जरिए पानी बुलाया जा रहा था। और यही पानी बच्चों को भी पीने के लिए दिया जा रहा था। मीडिया से बातचीत करते हुए आसपास के रहवासियों ने इस बात की पुष्टि की है।

पानी की रिपोर्ट गुरुवार देर रात मिली। आश्रम में बच्चे ऐसा पानी पी रहे थे जिसे लैबोरेटरी ने अन्य उपयोग के लायक भी नहीं माना है। गर्ल्स व बॉयज होस्टल से चार सैंपल लिए गए थे। इनमें से तीन में बैक्टीरिया पाया गया है।

पानी में मिला कॉलीफार्म बैक्टीरिया, एमपीएन काउंट भी जीरो नहीं- गर्ल्स होस्टल और बॉयज होस्टल से आरओ मशीन और बोरिंग के पानी के कुल चार सैंपल्स लिए थे। स्वास्थ्य विभाग की ही डिस्ट्रिक्ट पब्लिक हेल्थ लैबोरेटरी (डीपीएचएल) में इनकी जांच हुई। 48 घंटे बाद देर रात चारों रिपोर्ट प्रशासन को सौंपी गई। जिसके मुताबिक गर्ल्स होस्टल में आरओ, बोरिंग और बॉयज होस्टल में बोरिंग का पानी पीने योग्य बिलकुल नहीं था। वहीं वॉश एरिया के पानी में बैक्टीरिया पाया गया है। रिपोर्ट के अनुसार कॉलीफॉर्म काउंट 10 से ज्यादा आया है, जिसे पीने या अन्य उपयोग लायक नहीं माना जाता है।

यहां के पानी में कॉलीफार्म बैक्टीरिया भी पाया है। एमपीएन काउंट भी जीरो नहीं है। यदि पानी में एमपीएन काउंट आ रहा है तो इसका मतलब पानी में सीवेज या अन्य पैथोजेन मिल रहे हैं। इससे यह पता चलता है कि पानी में कुछ दूषित पदार्थ गया है।

आश्रम संचालिका ने मानी टैंकर से पानी पिलाने की बात- आश्रम के संचालिका अनीता शर्मा ने कहा कि ये बात सही है कि संस्था का बोरिंग खराब हुआ था लेकिन उसे जल्द सुधार करवा दिया गया था। हमारे द्वारा 2-3 बार जरूर टैंकर से पानी बुलवाना गया था।

कई दिनों तक संस्था की बोरिंग खराब होने के चलते इसी पानी से खाने-पीने के साथ अन्य उपयोग में लिया जा रहा था। चूंकि परिसर स्थित आश्रम में 200 बच्चों के अलावा हॉस्पिटल में भी पानी की आवश्यकता पड़ती है इस लिहाज से करीब 6000 लीटर के टैंकर पानी लेकर यहां आते थे।

बता दें कि प्रशासन की रिपोर्ट में पानी और खाने में गड़बड़ी होने की बात सामने आई है। वहीं 11 बच्चों में हैजा के सिंप्टम्स होने की पुष्टि हुई है। यह बीमारी खराब पानी पीने के चलते ही होती है।वहीं पूरी घटना पर लेकर कलेक्टर आशीष सिंह ने आश्रम संचालक को शोकाज नोटिस जारी कर 3 दिन में जवाब मांगा है। साथ ही कहा कि अगर संस्था घटना और पहले बच्चे की मौत की जानकारी समय पर देता तो यह स्थिति नहीं बनती।

बेटे की मौत के कारणों से अनजान है माता-पिता, आधी रात को सौंपा था शव- खास बात यह कि संस्था ने अंकित गर्ग जिसकी मौत 30 जून को हुई और घटना छिपाया था, उसमें चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। मूलतः पन्ना में रहने वाले उसके माता-पिता को बुलवाया गया था। 30 जून को संस्था ने रात 12.30 बजे उसका शव पिता मनोज गर्ग, चाचा, दादा, भाई को सौंपा था।

आधी रात को ही उसे पचकुइया मुक्तिधाम पर दफनाया गया था। चौंकाने वाली बात यह उसकी मौत किस कारण से हुई है यह सीधे तौर पर नहीं बताया गया। अब जबकि बच्चों में हैजा की बात सामने आई है तो अब सवाल उठ रहे है कि क्या अंकित की मौत हैजा से हुई? दूसरा यह कि फिर बॉडी पोस्टमॉर्टम के लिए क्यों नहीं भेजी गई। जिला प्रशासन इसकी जांच के लिए अंकित के दस्तावेज के साथ मुक्तिधाम के रजिस्टर सहित अन्य जानकारी जुटा रहा हैं। इसके साथ ही अंकित के परिजन से भी पूछताछ की जाएगी। संस्था ने शव सौंपने की प्रक्रिया के दौरान लिखा है कि वह सीवियर दिव्यांग होकर बहुत कमजोर था।

ट्रस्ट के पहले चेयरमैन बने थे धनराजजी शादीजा

ट्रस्ट की शुरुआत परमानंद गिरी महाराज (राम मंदिर के ट्रस्टी) द्वारा की गई थी। सूत्रों के मुताबिक एक महिला द्वारा उन्हें यह जमीन दान में दी गई। इसके बाद महाराज ने यह जमीन धनराज शादीजा को सौंपकर हॉस्पिटल खोलने का काम सौंपा।

साल 2002 में धनराज शादीजा के देख रेख में परमानंद हॉस्पिटल की शुरुआत हई। पिता के साथ तुलसी धनराज शादीजा ने भी कार्यभार संभालना शुरू कर दिया। पिता के निधन के बाद बाद उन्होंने जिम्मेदारी संभाली।

इस बीच 2006 में इसी परिसर में 'युग पुरुष' स्कूल का संचालन शुरू हो गया। इसमें प्रिंसिपल अनिता शर्मा और सेक्रटरी तुलसी शादीजा हैं। अध्यक्ष शादीजा की बेटी है। शादीजा की बेटी और दामाद भी हॉस्पिटल का कामकाज देखते हैं। शर्मा पूर्व में इंदौर में ही एक बड़े सरकारी सेंटर में पदस्थ थी।

कुछ साल पहले बच्चों ने आश्रम की बिल्डिंग से लगाई थी छलांग

मीडिया से बातचीत करते हुए रह-वासियों ने बताया कि कुछ साल पहले तक आश्रम में इस तरह की जालियां नहीं लगी हुई थी। यह रहने वाले बच्चे चूंकि मानसिक दिव्यांग है। किस काम से क्या घटना हो जाए इसका उन्हें अहसास नहीं होता। करीब दो-तीन बच्चों ने चढ़ाव और पहले माले से छलांग लगा कर बाहर आ गए, जिससे उनको चोटे भी आई थी। जिसके बाद से आश्रम वालों ने पूरे परिसर को जालियों से ढ़कवा दिया था।

गणाचार्य विराग सागर महाराज के समाधि पर विनयांजलि सभा

बड़ी संख्या में शामिल हुए समाजजन ने महाराजश्री को किया याद

इंदौर (नप्र)। गणाचार्य विराग सागर महाराज के समाधि पर इंदौर में विनयांजलि सभा का आयोजन गुरुवार रात को किया गया। इस सभा में बड़ी संख्या में समाजजन शामिल हुए और महाराजश्री को याद किया।

महाराष्ट्र जालना के पास गणाचार्य विराग सागर महाराज की संलेखना सहित समाधि हो गई थी। पुलक मंच परिवार के अध्यक्ष प्रदीप बड़जात्या एवं मीडिया प्रभारी वैभव कासलीवाल ने बताया कि दो पूर्व उनका अचानक जालना से औरंगाबाद की और विहार के दौरान स्वास्थ्य खराब हो गया था जिनका उनको समाधि का पूर्व आभास हो गया था इसलिए उन्होंने समाधि के पूर्व संघ संचालन संबंधित सारी व्यवस्था कर दी थी। वे अत्यंत वात्सल्य के धनी थे। आचार्य विशुद्ध सागर, आचार्य विहर्ष सागर ससंघ उनके 9 आचार्य शिष्य थे। जिनके माध्यम से भारत भर में महती धर्म प्रभावना हो रही है।

गणाचार्यश्री ससंघ 2013 में इंदौर में 66 पिच्छी के साथ पुलकमंच के तत्वावधान में दलालबाग और छत्रपति नगर इंदौर में महती धर्म प्रभावना के साथ चातुर्मास हुआ था। उनके इंदौर में हजारों भक्त है। इस विनयांजलि सभा में कई जैन समाज की संस्थाओं ने अपनी-अपनी विनयांजलि गणाचार्यश्री के चरणों में रखी। इस अवसर पर सांसद शंकर लालवानी एवं पूर्व पार्षद दीपक जैन टीनू ने भी अपनी विनयांजलि समर्पित की।सभा में समाज के डी.के जैन, टीके वेद, कैलाश वेद, अनिल जैन, सुदीप जैन, तल्लीन बड़जात्या, जैनेश झांझरी, राहुल जैन, विहर्ष कमल रावका, इंद्र कुमार सेठी, शिरीष जैन, वीरेंद्र बड़जात्या, महेंद्र निगोत्या, सुरेश सेठी, कमल काला, कैलाश पाटनी, विकास जैन सहित कई समाजजन उपस्थित थे। सभा का संचालन कैलाश लुहाड़िया ने किया आभार अनामिका मनोज बाकलीवाल ने माना।

निगम कमिश्नर निरीक्षण करने पहुंचे तो बेकलेन में ताले मिले

डेली कॉलेज, कृषि कॉलेज सहित सेंट पॉल स्कूल क्षेत्र में सफाई व्यवस्था देखी

इंदौर (नप्र)। नगर निगम कमिश्नर ने गीता नगर नाले, तिलक नगर व्यावसायिक क्षेत्र का निरीक्षण किया गया और बेकलेन में नागरिकों द्वारा गेट, ताला लगाए जाने पर बेकलेन के ताले खुलवाने के निर्देश दिए।

आयुक्त शिवम वर्मा द्वारा झोन क्रमांक 11 स्थित नेहरू स्टेडियम के पास बनाए गए रिचार्ज शाफ्ट का निरीक्षण किया। साथ ही स्टेडियम क्षेत्र में निर्मित ट्रैफिक गार्डन का भी अवलोकन करते हुए, वहां पर बनाए गए रिचार्ज शाफ्ट और कंपोस्ट का निरीक्षण किया।

इसके बाद आयुक्त द्वारा रेडियो कॉलोनी के पास स्थित मैदान में बनाए गए रिचार्ज शाफ्ट और जल संरक्षण के लिए किए गए कार्यों का अवलोकन किया गया।

इसके बाद आयुक्त वर्मा द्वारा रेडियो कालानी होते हुए डेली कॉलेज, कृषि कॉलेज, सेंट पॉल स्कूल और अन्य क्षेत्र में सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया गया। साथ ही सेंट पॉल स्कूल के सामने स्थित मसीह कॉन्वेंट के परिसर में रिचार्ज शाफ्ट का निरीक्षण किया।

इसके साथ ही आयुक्त वर्मा द्वारा पलासिया चौराहा सेल्फी पॉइंट के पास स्थित नाला सफाई का निरीक्षण किया। नाल किनारे किए जाने वाले पौधरोपण कार्यों के संबंध में भी जानकारी ली और आवश्यक तैयारी करने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान अपर आयुक्त अभिलाष मिश्रा, अधीक्षण यंत्री महेश शर्मा, मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर अखिलेश उपाध्याय, क्षेत्रीय झोनल अधिकारी जितेश तिवारी और अन्य उपस्थित थे।

प्रेमी ने कहा- शादी नहीं करूंगा..सुनते ही दे दी जान

बैंक की छत से कूदकर जान देने वाली युवती का बॉयफ्रेंड गिरफ्तार

इंदौर (नप्र)। कनाड़िया थाना क्षेत्र में बैंक बिल्डिंग की छत से कूदकर युवती की आत्महत्या करने के मामले में खुलासा हुआ है। आखिरी वक्त में वह जिस शख्स से मोबाइल पर बात कर रही थी, वह उसका प्रेमी था। पुलिस ने आरोपी प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया है। उस पर युवती को धोखा देने और आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप हैं।

कनाड़िया निवासी बुलबुल चंदेल (27) कनाडिया इलाके में बैंक के ऊपर कार्यरत रियल एस्टेट कंपनी में काम करती थी। 27 जून को सुबह 11.30 बजे वह ऑफिस की बिल्डिंग के टॉप फ्लोर पर पहुंची। वहां किसी से मोबाइल पर लगातार बात करती रहीं। उसके बाद छत से छलांग लगा दी। रेलिंग पर गिरी और दोपहर 2.30 बजे दम तोड़ दिया। युवती के पिता मोहन चंदेल बिजली कंपनी में हैं।

रियल एस्टेट कंपनी की कर्मचारी बुलबुल की मौत के बाद पुलिस ने आखिरी कॉल ट्रेस किया। वह कॉल उसके प्रेमी दीपक यादव का था। उसी से बात हो रही थी। पूछताछ में पता चला है कि प्रेमी दीपक ने तब फोन पर उससे कहा था कि तू मर जा, फिर भी शादी तो नहीं करूंगा। परिवार को भी इनके प्रेम प्रसंग की जानकारी पहले से थी लेकिन बात इतनी बिगड़ जाएगी, इसकी आशंका नहीं थी।

कनाड़िया पुलिस के मुताबिक बुलबुल दीपक यादव के बीच करीब 7 साल से लव रिलेशन था। इन दोनों की पहली मुलाकात बुलबुल के घर पर हुई थी। दीपक लोन कंपनी से जुड़ा है। बुलबुल की मां अनीता ने 2017 में समूह लोन के लिए अप्लाय किया था। इसी सिलसिले में दीपक उनके घर आया था। यहां पहली मुलाकात के बाद बुलबुल और दीपक दोस्त बन गए। मेल जोल बढ़ता चला गया।

शादी की तारीख नहीं बता रहा था दीपक

दीपक ने शुरुआत में शादी पर रजामंदी दी। बाद में वह पलट गया। उसने उससे शादी करने से मना कर दिया। बुलबुल डिप्रेशन में चली गई थी। वह बार-बार उस पर शादी का दबाव बनाती रही। पिता मोहन ने भी उसे मनाने की कोशिश की लेकिन वह नहीं मानी। 27 जून को भी शादी की बात पर दोनों में झगड़ा हुआ। जब दीपक ने कह दिया कि वह तू मर भी जा फिर भी शादी नहीं होगी। यही नहीं, यह भी कहा कि जब तक मेरी मर्जी नहीं होगी, तब तक बुलबुल तुझे किसी दूसरे से भी शादी नहीं करने दूंगा। इसके बाद बुलबुल ने बिल्डिंग से कूदकर आत्महत्या कर ली थी।

अगले दो दिनों में बनेगा स्ट्रॉन्ग सिस्टम; फिर तेज बारिश की बनेगी स्थिति

इंदौर में बादलों का दौर, कई क्षेत्रों में बूंदाबांदी

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पिछले 24 घंटों में बादलों का दौर चल रहा है। दिन में 24 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चली जिससे दिन के तापमान में 1 डिग्री की गिरावट आई है। रात का तापमान तीन दिनों से 24 डिग्री बना हुआ है। शुक्रवार सुबह से बादल छाए हुए हैं। मौसम वैज्ञानिकों ने आज गरज-चमक के साथ हल्की बारिश के आसार जताए हैं। अगले दो दिनों में स्ट्रॉन्ग सिस्टम बनेगा। इससे इंदौर के कुछ हिस्सों में तेज बारिश का अनुमान है। सुबह कुछ क्षेत्रों में बूंदाबांदी भी हुई।बुधवार को दिन का तापमान 30.2 (-3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। शुक्रवार को दिन का तापमान 1 डिग्री लुढ़ककर 29.3 (-4) डिग्री सेल्सियस रहा। बुधवार को रात का तापमान 24.6 (+1) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। गुरुवार रात इसमें हल्की गिरावट आई और तापमान 24.4 (+1) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। अभी रात का तापमान भले ही औसत से 1 डिग्री ज्यादा हो लेकिन मौसम में ठण्डक जरूर है।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह के मुताबिक दक्षिणी गुजरात के ऊपर साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव है। ट्रफ लाइन भी गुजर रही है। एक अन्य ट्रफ लाइन और चक्रवाती घेरा भी है। इससे प्रदेश में अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से नमी आ रही है।डॉ. सिंह ने बताया अगले 24 घंटे में कई जिलों में 5 से 8 सेंटीमीटर तक बारिश हो सकती है। 48 घंटे के बाद सिस्टम कमजोर होगा लेकिन हल्की बारिश जारी रहेगी। 7 जुलाई को सिस्टम फिर स्ट्रॉन्ग होगा। इससे 8 जुलाई को भारी बारिश हो सकती है। इंदौर में आज तेज हवा, गरज-चमक के साथ हल्की बारिश हो सकती है। दो दिन बाद तेज बारिश हो सकती है।

मप्र में जून महीने में घटी हवाई यात्रियों की संख्या

भोपाल में 8 और इंदौर में 6 हजार यात्री घटे, जबलपुर-ग्वालियर में मामूली उतार-चढ़ाव

इंदौर (नप्र)। इंदौर सहित मप्र के चार बड़े शहरों में से तीन शहर के एयरपोर्ट पर आने-जाने वाले यात्रियों की संख्या में जून माह में गिरावट देखने को मिली है। इंदौर, भोपाल और जबलपुर एयरपोर्ट से यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या में मई माह के मुकाबले जून माह में गिरावट दर्ज की गई है। वहीं ग्वालियर एयरपोर्ट पर यात्रियों की संख्या में मामूली सी बढ़त हुई है।
केंद्र सरकार द्वारा मप्र के इंदौर, भोपाल और जबलपुर एयरपोर्ट को लगातार आधुनिक बनाने के लिए विकास कार्य किए जा रहे है लेकिन दूसरी तरफ एयरपोर्ट पर यात्रियों की संख्या में गिरावट देखने को मिल रही है। प्रदेश के इन तीनों ही एयरपोर्ट पर जून माह में यात्रियों की संख्या में गिरावट क्यों आई इसके लिए तीन कारण बताएं जा रहे हैं।
1. समर वैकेशन खत्म होते ही जून माह से ऑफ सीजन शुरू हो जाता है। इसके चलते जून में यात्रियों की संख्या में गिरावट देखने को मिलती है।
2. जून महीने के तीसरे हफ्ते से मानसून आ जाता है। इसके चलते भी यात्रियों की संख्या कम होने लगती है। मानसून का सबसे ज्यादा असर जुलाई में यात्रियों की संख्या पर पड़ता है।
3. एयरलाइंस कई कारणों से अपनी तय फ्लाइट को कैंसिल कर देते है। जिससे यात्री या तो री-फंड लेकर अपनी यात्रा टाल देते हैं या फिर अन्य विकल्प से यात्रा करते हैं। जून माह में इंदौर से दिल्ली की 7 से ज्यादा फ्लाइट कैंसिल हो चुकी हैं।

संपादकीय

पौध संरक्षण की बात भी हो

मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से राज्य में पौधरोपण का प्रदेशव्यापी अभियान 6 जुलाई से प्रारंभ हो रहा है, जो सराहनीय है। इसे 'एक पेड़ मां के नाम' का नाम दिया गया है, जो पौधरोपण को भावनात्मक स्पर्श भी देता है। इस अभियान के तहत मप्र में कुल साढ़े 5 करोड़ पौधे रोपे जाएंगे। इनमें से अकेले भोपाल जिले में ही 12 लाख पौधे लगाए जाएंगे। जबकि इंदौर जिले में 51 लाख पौधे लगाने की योजना है। पौधरोपण के दौरान विद्यार्थियों को पर्यावरण का महत्व बताने के साथ ही विरासत से भी जोड़ा जाएगा। 6 जुलाई को राष्ट्रवादी विचारक, शिक्षाविद् और भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती है। इसी संदर्भ में मुख्यमंत्री ने हाल अधिकारियों की बैठक में निर्देश दिए थे कि भोपाल जिला पर्यटन परिषद और अन्य संस्थाएं विद्यार्थियों को पुरातात्विक महत्व के स्थानों, विज्ञान संग्रहालय और अन्य संग्रहालयों की सैर करवाएं। भोपाल में ऐसे जीवंत प्रयास होने चाहिए जिससे राजधानी एक मॉडल बने और अन्य स्थानों पर उसकी चर्चा हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के लिए जन अभियान परिषद, अखिल विश्व गायत्री परिवार और अन्य संस्थाओं का पूरा सहयोग लिया जाए। भोपाल में पौधरोपण के लिए करीब 350 स्थल पौध-रोपण के लिए चयनित किए गए हैं। कुल 480 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधे लगाने का लक्ष्य है। मप्र में जिस तरह तेजी से हरियाली घट रही है, उसे देखते हुए बड़े पैमाने पर पौधरोपण करने तथा उनके संवर्द्धन की निहायत जरूरत है। सीमेंट के जंगल खड़े करने के लिए मनमाने तरीके से पेड़ काटे जा रहे हैं। उसकी एवज में पौधरोपण नहीं के बराबर होता है। क्योंकि काटे गए पेड़ों के बदले में उतने ही पेड़ लगाने की जिम्मेदारी किसी की नहीं है और न ही इसे कोई गंभीरता लेता है। भोपाल के हरित क्षेत्र शिवाजी नगर में पिछले दिनो मंत्री विधायकों के बंगले बनाने के नाम पर 29 हजार पेड़ काटने का महाघातक प्लान बना था, जिसे भारी जनविरोध के बाद सरकार को वापस लेना पड़ा था। समग्रता में देखें तो राजधानी भोपाल में पिछले 5 साल में सरकारी तौर पर साढ़े 6 लाख से अधिक पेड़ लगाए गए। इस पर करीब 30 करोड़ खर्च हुए। हालत ये है कि इनमें 70 फीसदी सूख चुके हैं। बीआरटीएस व स्मार्ट सिटी के नाम पर शिफ्ट 775 पेड़ों में से एक भी नहीं बचा। पौधरोपण व पेड़ों की शिफ्टिंग के नाम पर सिर्फ दिखावा हो रहा है। इसकी न तो किसी को चिंता है और न ही इसके लिए किसी की कोई जवाबदेही है। राज्य के बाकी हिस्सों की भी वही कहानी है। पेड़ लगाने के नाम पर करोड़ों खर्च होंगे। लेकिन उन्हें बचाने का कोई प्रावधान नहीं है और न ही उनकी कोई सुरक्षा व्यवस्था है। उदाहरण के लिए भोपाल के कलियासोत डेम से 13 शटर तक 2019 में रोपे गए 2000 पौधों का अब कोई निशान नजर नहीं आता। स्मार्ट सिटी एरिया में स्टेडियम के पास, जवाहर चौक, लाड़ली बहना पार्क में रोपे गए ज्यादातर पौधे गायब हो चुके हैं। नियम ऐसे हैं कि 30 सेमी से अधिक गोलाई वाले किसी भी पेड़ को केवल फीस जमा कर काट सकते हैं। नतीजा शहर का ग्रीन कवर सिर्फ 9 फीसदी रह गया है। मुद्दा यह कि सरकार पेड़ लगाए, लेकिन उनकी कम से कम पांच साल तक देखभाल की जिम्मेदारी भी तय करे। तभी इस अभियान की सार्थकता है। मात्र पौधे लगाकर उन्हें भगवान भरोसे छोड़ देना महज वृक्षारोपण के नाम करोड़ो रू. बर्बाद करना है और कुछ नहीं।

नजरिया

कुमार प्रशांत

लेखक गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हैं।

लंगड़ी व पतनशील गठबंधनों की संसद

जिस पार्टी ने, जिन पार्टियों के साथ जोड़ बिठाकर सरकार बनाई है, उन सबको मालूम है कि यह वक्ती व्यवस्था है। कौन, पहले, किसे और कब लंगड़ी मारता है, इसी पर इस लोकसभा का भविष्य टिका है; और यह तो सारे संविधानज्ञ जानते हैं कि लोकसभा के भविष्य पर ही सांसद नाम के निरीह प्राणियों का भविष्य टिका होता है। निरीह इसलिए कह रहा हूं कि पिछले कम-से-कम 10 सालों से हमारे सांसदों का एक ही काम रहा है, जिसे वे बड़ी शिद्दत से निभाते हैं। सरकार की दी हुई मेज थपथपाना या भगवान की दी हुई हथेलियों से तालियां बजाना।

हमारी नई लोकसभा अभी बनी ही है, लेकिन चल नहीं पा रही। चल पाएगी, इसमें शक है। चलकर भी क्या कर पाएगी, कह नहीं सकते। कहावत बहुत पुरानी है जो हर अनुभव के साथ नई होती रहती है कि 'पूत के पांव पालने में ही दीख जाते हैं।' जो पांव दीख रहा है, वह शुभ नहीं है। यदि मैं भूलता नहीं हूं तो कवि विजयदेव नारायण साही ने इस कहावत में एक दूसरी मार्मिक पंक्ति जोड़ दी थी : 'पूत के पांव पालने में मत देखो/ वह पिता के फटे जूते पहनने आया है।' इस लोकसभा के बारे में यही पंक्ति बार-बार मन में गूंज रही है।

जिस पार्टी ने, जिन पार्टियों के साथ जोड़ बिठाकर सरकार बनाई है, उन सबको मालूम है कि यह वक्ती व्यवस्था है। कौन, पहले, किसे और कब लंगड़ी मारता है, इसी पर इस लोकसभा का भविष्य टिका है; और यह तो सारे संविधानज्ञ जानते हैं कि लोकसभा के भविष्य पर ही सांसद नाम के निरीह प्राणियों का भविष्य टिका होता है। निरीह इसलिए कह रहा हूं कि पिछले कम-से-कम 10 सालों से हमारे सांसदों का एक ही काम रहा है, जिसे वे बड़ी शिद्दत से निभाते हैं : सरकार की दी हुई मेज थपथपाना या भगवान की दी हुई हथेलियों से तालियां बजाना।

विपक्ष भी ऐसा ही करता है। फर्क है तो बस इतना कि उसके पास कोई प्रधानमंत्री नहीं होता। इस बार उसके पास एक 'छाया प्रधानमंत्री' जरूर है जिसकी छाया कब तक, कहां तक रहती है, देखना बाकी है। हम दुआ करते हैं कि अंग्रेजी के 'शैडो प्राइम-मिनिस्टर' का मक्खीमार अनुवाद भले उसे 'छाया प्रधानमंत्री' कहे, नेता प्रतिपक्ष कभी इस प्रधानमंत्री की छाया न बनें। न उनकी छाया में रहें, न उनको छाया दें।

ओम बिरला को दोबारा लोकसभा अध्यक्ष बनाने के पीछे प्रधानमंत्री का एक ही मकसद था : विपक्ष को आखिरी हद तक अपमानित करना! बिरला कभी इस पद के योग्य नहीं थे; आज भी नहीं हैं। विद्वता, कार्यकुशलता, व्यवहार-कुशलता, वाकपटुता तथा सदन में गरिमामय माहौल बनाए रखने जैसे किसी भी गुण से उनका नाता नहीं रहा है, यह हमने पिछले पांच सालों में देखा है। पता नहीं विपक्ष ने उनका इतना स्वागत व गुणगान क्यों किया!

ओम बिरला ने पिछली संसद में जिस तरह विपक्ष को तिरस्कृत व अपमानित किया था, उसे ही दोहराने के लिए इस बार उन्हें ही प्रधानमंत्री ने आगे किया है, ताकि विपक्ष व देश समझे कि कहीं, कुछ भी बदला नहीं है। नई लोकसभा के पहले ही दिन वे अपने पुराने अवतार में दिखाई दिए। जिस असभ्यता से उन्होंने दीपेंद्र हुड्डा को अपमानित किया; शशि थरूर के 'जय संविधान' कहने से तिलमिलाए, विपक्ष के सांसदों को कब उठना-कब बैठना सिखाने की फब्ती कसी - वह सब यह समझने के लिए पर्याप्त है कि उन्हें क्या करना का निर्देश हुआ है। राहुल गांधी ने जब यह कहा कि उनका माइक बंद क्यों किया गया, तो अध्यक्ष का जवाब आया कि मैंने पहले भी यह व्यवस्था दी है कि मेरे पास माइक

का कोई बटन नहीं है। क्या अध्यक्ष की जानकारी व अनुमति के बगैर ही कोई, कहीं से बैठकर लोकसभा की कार्रवाई में दखल दे रहा है? अगर ऐसा है तो अध्यक्ष चाहिए ही क्यों? जो अनदेखा- अनजाना आदमी बटन बंद कर सकता है, वही लोकसभा चला भी सकता है। 'इंडिया गठबंधन' को तब तक न लोकसभा जाना चाहिए, न राज्यसभा जब तक कि यह बता न दिया जाए कि माइक बंद किसने किया था, किसकी अनुमति या निर्देश से किया था?

परंपरा की बात है तो यह समझना जरूरी है कि विपक्ष के नेता की भी परंपराएं हैं। इस अध्यक्ष को न वे परंपराएं पता हैं, न विपक्ष के नेता का मतलब मालूम है। जिन सांसदों का जन्म ही 10 साल पहले हुआ है, उनकी यह त्रासदी स्वाभाविक है। उनकी तो आंखें जब से खुली हैं तब से उन्होंने यही देखा-जाना है कि लोकसभा का मतलब एक ही आदमी होता है। जैसे यह परंपरा है कि अध्यक्ष जब खड़ा हो जाए तो सभी सांसदों को बैठ जाना चाहिए; प्रधानमंत्री जब बोल रहा हो तब सांसदों को शांति से उसे सुनना चाहिए; वैसी ही परंपरा यह भी है कि विपक्ष का नेता जब बोल रहा हो तब उसे अध्यक्ष द्वारा बार-बार टोकना, बार-बार समय का भान कराना, क्या बोलें, क्या न बोलें आदि का निर्देश देना गलत है, अशिष्टता है, लोकतांत्रिक परंपरा का उल्लंघन है।

आखिर परंपराएं बनती कैसे हैं और उन्हें ताकत कहां से मिलती है? परंपराएं कानूनी प्रावधानों से भी अधिक मान्य क्यों होती हैं? सिर्फ इसलिए कि कोई भी उन्हें तोड़ता नहीं है। संविधान प्रदत्त शक्तिवान भी उनका शालीनता से पालन कर, उसे और अधिक मजबूत व काम्य बनाते हैं। राष्ट्रगान चल रहा हो तब राष्ट्रपति के सामने से धड़धड़ाते हुए निकलकर अपनी कुर्सी पकड़ने वाला लोकसभा अध्यक्ष हो कि राष्ट्रपति प्रवेश करें तब भी अपनी कुर्सी पर बैठा रहने वाला प्रधानमंत्री, ये सब हरकतें परंपराओं को ठेस पहुंचाती हैं।

अंधभक्त अपनी फिक्र आप करें, लेकिन हम-आप तो सोचें कि ऐसा क्यों है कि सत्तापक्ष के सारे शब्द इतने खोखले लगते हैं? शिक्षामंत्री ठीक ही तो कह रहे थे कि 'नीट' के बारे में हम विपक्ष के सारे सवालों का जवाब देने को तैयार हैं। वे कह तो रहे थे, लेकिन उनके हाव-भाव व तेवर यह कहते सुनाई दे रहे थे कि कर लो जो करना हो, हम कोई चर्चा नहीं करेंगे। ऐसा इसलिए था कि इसी मंत्री ने, इसी 'नीट' के बारे में लगातार यही कहा था कि न कोई लीक हुआ है, न कोई घोटाला हुआ है, सब विपक्ष का किया-धरा है।

राहुल गांधी चाहें-न-चाहें, वे कसौटी पर हैं। आज नेता-प्रतिपक्ष शोभा का पद नहीं है। आज यह पद विकल्प खड़ा करने की चुनौती का पद है। विपक्ष को वक्त की सीधी चुनौती यह है कि क्या पंडित जवाहरलाल के दौर वाली संसद वापस लाने की कूवत उसमें है? नेहरू वाली संसद इसलिए कह रहा हूं कि हमने वहीं से अपना सफर शुरू किया था और लगातार फिसलते हुए यहां आ पहुंचे हैं। तो कैसे कहूं कि उस दौर से भी बेहतर संसद बनानी चाहिए ! पहले वहां तक तो पहुंचो, जहां से गिरे थे; फिर उससे ऊपर उठने की बात करेंगे।

राहुल गांधी व 'इंडिया गठबंधन' ने संविधान की किताब दिखा-दिखाकर प्रधानमंत्री को जिस तरह चुनाव में कमजोर किया, उसकी काट उन्होंने यह निकाली कि लोकसभा अध्यक्ष को मोहरा बना कर आपातकाल की निंदा का प्रस्ताव पारित करवाया। यह उस विज्ञापन की तरह था कि 'उसकी कमीज मुझसे सफेद कैसे?' लेकिन कांग्रेस को इससे बौखलाने की क्या जरूरत थी? कोई 50 साल पहले हुई चूक, जिसे इंदिरा गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष ने कई बार सार्वजनिक रूप स्वीकार किया है, उसे लेकर कांग्रेस अब क्यों बिलबिलाती है? वह इतिहास की बात हो गई। यह भी याद रखना चाहिए कि जनता पार्टी की अल्पजीवी सरकार ने 1977 में ऐसी संवैधानिक व्यवस्था खड़ी भी कर दी है कि किसी सरकार के लिए आपातकाल लगाना असंभव-सा है।

यह वह संसद है जिसके शब्दों का कोई मोल ही नहीं रह गया है। शेरो-शायरी भी हो रही है, कहावतें भी दोहराई जा रही हैं, प्रधानमंत्री बड़े-बड़े विचारकों-दार्शनिकों के उद्धरण भी ला-लाकर पढ़ते हैं, लेकिन सब-के-सब इतने प्रभावहीन क्यों हो जाते हैं? इसलिए कि उनके पीछे विश्वसनीयता का बल नहीं है। आस्थाहीन प्रवचन आत्माहीन कंकाल की तरह होता है। यह लंगड़ी व पतनशील गठबंधनों की संसद है जो जब तक रहेगी, राष्ट्र व लोकतंत्र को शर्मसार करती रहेगी। विपक्ष के नेता व संपूर्ण विपक्ष को लगातार यह दबाव बनाए रखना चाहिए कि यह संसद सुधरे या बदले ! (सप्रेस)

मुद्दा

चेतनादित्य आलोक

लेखक पत्रकार हैं।

भूखे लोग और भोजन की बर्बादी का सिलसिला

भारतीय संस्कृति में एक ओर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यंतु मां कश्चिद् दुःखभाग भवेत्' कहकर समस्त जीव जगत् के कल्याण की बात कही गई है, वहीं दूसरी ओर '...वसुधैव कुटुम्बकम' कहकर इस संपूर्ण वसुधा को ही एक परिवार के रूप में स्वीकार किया गया है। गौरतलब है कि हमारी संस्कृति ने जीवन में हमें 'एकल' को स्वीकारने, उसका मानवर्द्धन करने अथवा उसकी ओर अग्रसर होने की बात नहीं सिखाई, बल्कि 'एकल' की जगह 'सकल' को हमारे जीवन-यज्ञ में स्थापित करने का कार्य किया। हमारे पूर्वजों ने हमें 'व्यष्टि' के स्थान पर 'समष्टि' को महत्व और प्राथमिकता देने की बात सिखाई। तात्पर्य यह कि हमारे ऋषि-मुनियों ने हमें सिखाया कि इस नश्वर संसार में 'मैं' का कोई महत्व नहीं। यहां तो 'हम' के बिना मनुष्य के जीवन में कुछ होने ही वाला नहीं है। वैसे यह सच है कि मनुष्यता का ऐसा औदात्य भाव, संस्कारों की ऐसी तरलता और ऐसी सांस्कृतिक गहराई दुनिया के किसी भी अन्य समाज, संस्कृति या धर्म में नहीं मिलती, जबकि हमारी संस्कृति में ये हमारी धमनियों में प्रवाहित होने वाले लहू के समान तथा हमारी श्वांसों के साथ हमारी देह में प्रविष्ट करने वाली प्राण-धारा के समान हैं।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो ये हमारे पूर्वजों द्वारा मनुष्य जाति के लिए 'मर्यादा' स्वरूप स्थापितऐसेमानदंड हैं, जिनके बल पर ही अतीत में भारत दुनिया के पटल पर विश्वगुरु के रूप में स्थापित हुआ और युगों-युगों तक बना रहा। लेकिन क्या कारण है कि समस्त जीव जगत् के कल्याण की चिंता करने और इस संपूर्ण वसुधा को ही एक परिवार के रूप में स्वीकार करने वाला समाज आज स्वयं ही इतना लापरवाह, लाचार और गैर जिम्मेदार हो गया कि उसके एक नागरिक का दूसरे नागरिक की भय, भूख, तड़प, पीड़ा, संकट और समाधान से कोई वास्ता ही नहीं रह गया है। यह अत्यंत दुःखद है कि हम अपने पूर्वजों से विरासत में मिले इस दैवीय औदात्य भाव, सांस्कारिक तरलता एवं सांस्कृतिक गहराई को बचाकर नहीं रख पाए... और कालांतर में हम धीरे-धीरे पतन की ओर बढ़ते चले गए। इस प्रकार हमने अपनी संस्कृति के उन विराट तत्वों, महान मूल्यों और मर्यादाओं को समूल तो नहीं, किंतु अंशतः अवश्य छोड़ दिया, जो मानव मात्र के लिए वास्तव में अपरिहार्य होने चाहिए थे। तात्पर्य यह कि अन्य समाजों के लोगों की तरह हम भी जागतिक जिम्मेदारियों से मुख मोड़कर जीवन की आपा-धापी में भीड़ गए।

इसका सबसे बड़ा कारण यह रहा है कि दुनिया के तमाम विकसित देशों और समाजों की भौतिक समृद्धि की चमकीली तस्वीरों के प्रति आकर्षित होकर हमने उनका अंधानुकरण करना शुरू कर दिया, जिनके लिए उनका 'स्व' ही 'समग्र' रहा है।चिंतन और विचार के स्तर पर आए इस बदलाव ने कालांतर में हमें भौतिक समृद्धि तो अवश्य प्रदान की, किंतु बदले में हमसे दैवीय औदात्य भाव, सांस्कारिक तरलता एवं सांस्कृतिक गहराई स्वरूप हमारे अत्यंत बहुमूल्य रत्न छीन लिए। देखा जाए तो चिंतन और विचार के स्तर पर मनुष्य के भीतर आया यह बदलाव ही आज संसार की तमाम बड़ी से बड़ी, ज्वलंत और जटिलतम समस्याओं यथा गरीबी, भुखमरी, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण, जल, मृदा और ध्वनि समेत तमाम प्रकार के प्रदूषणों, आतंकवाद, उग्रवाद एवं युद्ध की विभीषिका आदि की जड़ स्वरूप है। यह सच है कि हमें भी अन्य समाजों की तरह आधुनिक होने और तरक्की करने का अधिकार है। साथ ही आधुनिकता और तरक्की के उन्नत से उन्नत तरकीवों को अपनाना हमारी आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी है,जिस प्रकार संतानों के उचित पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करने और उन्हें विकास के अवसर प्रदान करने की जिम्मेदारी प्रत्येक माता-पिता की होती है,अन्यथा हमारी नई पीढ़ी गरीबी और भुखमरी की कोहकाफी दुनिया में खोकर भटकती और हमें कोसती फिरेगी।

लेकिन दूसरी ओर हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिलने वाला मनुष्यता का दैवीय औदात्य भाव, सांस्कारिक तरलता एवं सांस्कृतिक गहराई को बचाकर भी रखने की जरूरत थी। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हमें इनके मध्य सामंजस्य स्थापित कर... एक संतुलन बनाकर चलना चाहिए था। यही संतुलन सनातन का भी अभीष्ट रहा है। यदि ऐसा नहीं होता तो भला श्रीराम और श्रीकृष्ण के युग में भारतवर्ष सामाजिक, सांस्कृतिक, सांस्कारिक, आध्यात्मिक, भौतिक, मानसिक आदि सभी स्तरों पर सर्वोन्नत समाज के रूप में स्थापित कैसे हो पाता।साथ ही साक्षात् मर्यादा स्वरूप मनुष्य रूप में अवतरित हुए भगवान श्रीराम को भला धनुष क्यों उठाना पड़ता और राजा बनने के बाद अपनी प्रजा के ऐहिक, दैविक एवं भौतिक तापों-संतापों को हरने तथा उनके समस्त सांसारिक सुख-सुविधाओं की व्यवस्था करने की जरूरत क्यों पड़ती। इसलिए जरूरी है कि हम अपना विकास तो करें ही, किंतु अपने संस्कारों और संस्कृति के मानदंडों अर्थात् जीवन और जगत् के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी कदापि न भूलें।हम 'स्व' नहीं 'समग्र' केसमर्थक बनें। हम 'एकल' को त्यागकर 'सकल' की ओर अग्रसर हों और 'व्यष्टि' को छोड़ एक बार पुनः 'समष्टि' को महत्व एवं प्राथमिकता देने की शुरूआत करें।

बहरहाल, अप्रैल के अंत में जारी संयुक्त राष्ट्रऊ की 'ग्लोबल रिपोर्ट ऑन फूड क्राइसिस' में बताया गया है कि विश्व भर के कुल 59 देशों के लगभग 28.2 करोड़ लोग भूख से तड़पने के लिए मजबूर हैं। रपट के अनुसार युद्धग्रस्त गाजा पट्टी और सूडान में बिगड़े खाद्य सुरक्षा के हालातों के कारण 2022 में 2.4 करोड़ से भी अधिक लोगों को खाद्य सामग्री के अभाव में भूखे रहना पड़ा।बता दें कि भोजन के अभाव को लेकर रपट जारी करने की शुरूआत संयुक्त राष्ट्रऊ ने 2016 में की थी।देखा जाए तो पहली रपट की तुलना में हालिया रपट में भूखे लोगों की संख्या में चार गुणा की वृद्धि हो चुकी है। साथ ही खाद्य सामग्री के अभाव में भूख से तड़पने वालों की यह संख्या अब तक की सर्वाधिक है। हालांकि भूखे रहने का एक कारण रुपये के अभाव में भोजन नहीं खरीद पाना भी हो सकता है, जो भोजन के अभाव और भूख से संबद्ध भारतीय परिदृश्य में सार्थक और सटीक प्रतीत होता है। जाहिर है कि यदि ऐसा नहीं होता तो भारत सरकार भला 80 करोड़ भारतीयों को मुफ्त में राशन क्यों उपलब्ध कराती। बहरहाल, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के अर्थशास्त्री मैक्सिमो टोरेरो के अनुसार विश्व भर के विशेषज्ञों ने भूख का एक पैमाना निर्धारित किया है, जिसमें पांच चरण हैं।

इनमें भूख से सर्वाधिक पीड़ित लोगों को पांचवें चरण में रखा गया है, जिसके अंतर्गत भारत समेत पांच देशों के 705000 लोग शामिल किए गए हैं। इनमें से 80 प्रतिशत यानी 577000 लोग तो अकेले युद्धग्रस्त गाजा पट्टी में हैं। बताना जरूरी है कि 'ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2023' के अनुसार भुखमरी के शिकार 125 देशों की सूची में भारत को 111वां स्थान प्राप्त है।जरा सोचिए कि 21वीं सदी में पहुंचकर भी हमारे देश की पहचान भुखमरी से पीड़ित लोगों वाले देश के रूप में जगजाहिर हो रही है, जबकि दूसरी ओर हम दुनिया के तमाम विकसित देशों के समांतर तमाम अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों को अंजाम तक पहुंचाने तथा रक्षा उपकरणों के निर्माण समेत विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होने का कार्य कर रहे हैं। आज हमारी विदेश नीति, कूटनीति, रक्षा प्रणाली और हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक अवदानों को दुनिया भर में स्वीकृति मिल रही है। हम पांचवीं अर्थव्यवस्था बन चुके हैं और हमारा लक्ष्य शीघ्र ही कुछ वर्षों के भीतर भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने का है। वहीं, भोजन की बर्बादी की बात करें तो मार्च के अंत में जारी संयुक्त राष्ट्र की अधीनस्थ इकाई 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम' (यूएनईपी) की 'फूड वेस्ट इंडेक्स 2024' की रपट में कहा गया है कि रोजाना दुनिया में जितने लोग भूखे सो जाते हैं, उससे कहीं ज्यादा अनाज बर्बाद हो जाता है, जिसमें सबसे बड़ी भूमिका होटल और रेस्तरां वाले निभाते हैं।

रपट के अनुसार साल 2022 में वैश्विक स्तर पर कुल अनाज उत्पादन का 19 प्रतिशत अनाज यानी लगभग 1.05 अरब टन अनाज बर्बाद हो गया था। बता दें कि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की खाद्य बर्बादी सूचकांक रपट वर्ष 2030 तक खाद्य बर्बादी को आधा करने के लिए देशों की प्रगति की निगरानी करती है। इस रपट में कहा गया है कि यदि अनाज की बर्बादी को रोक लिया जाए तो दुनिया से भुखमरी समाप्त की जा सकती है, क्योंकि अभी दुनिया में रोजाना 78.3 करोड़ लोग गंभीर भूख का सामना करते हैं, जबकि एक अरब लोगों का खाना बर्बाद हो जाता है। शोधकर्ताओं के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सालाना लगभग 79 किलोग्राम भोजन बर्बाद करता है, जो दुनिया भर में प्रतिदिन बर्बाद होने वाले कम से कम एक अरब भोजन थाली के बराबर है। देखा जाए तो भोजन की बर्बादी एक वैरूिवक त्रासदी है, जिसे रोका जाना बेहद जरूरी है, क्योंकि यह समस्या न केवल वैश्विक अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव डालती है, बल्कि जलवायु परिवर्तन तथा जैव विविधता के नुकसान के लिए भी जिम्मेदार है।

(इतिश्री)

अपेक्षा कहीं दुख का कारण न बन जाए...

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

हर कोई अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व की किसी न किसी विशिष्टता के चलते अपने आप में महत्वपूर्ण होता है। इस नाते कोई कम तो कोई ज्यादा सम्मान का पात्र भी होता है। लेकिन यह कतई जरूरी नहीं होता कि जो अपने आप को जिस सम्मान के योग्य समझता है, उसी अनुपात में उसे यथोचित सम्मान मिल सके। इसके चलते किसी-किसी को अपेक्षा से अधिक सम्मान मिल जाता है तो किसी को अपेक्षित सम्मान नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में कोई प्रबल आत्मविश्वास से भर जाता है तो कोई कुंठित मानसिकता से ग्रस्त हो जाता है। दोनों ही स्थिति अनेक विषमताओं को जन्म देती है।

जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब हम अपेक्षित मान-सम्मान से अपने आप को वंचित पाते है। इसके चलते काफी हद तक मन व्यथित होता है और कभी-कभी तो किसी के प्रति दुराग्रह के भाव भी मन में पनपने लगते हैं। दरअसल हर किसी का किसी व्यक्ति विशेष के कद के आकलन का पैमाना अलग-अलग होता है। कोई धन को महत्व देता है, कोई पद एवं प्रतिष्ठा को महत्व देता है और कोई ज्ञान तथा अनुभव को महत्व दिया करता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी की नजरों में सामने वाले का धन वैभव, पद-प्रतिष्ठा और अनुभव या ज्ञान से परे किसी अन्य प्रकार की विशिष्टता ही सामने वाले को महत्वपूर्ण बनाती हो। हर किसी का अपना एक अलग नजरिया होता है।

दरअसल हर व्यक्ति की जीवन में प्राथमिकताएं अलग-अलग हुआ करती है। किसी भी व्यक्ति विशेष के लिए आखिर क्या महत्वपूर्ण है, इसका आकलन उसकी मानसिक स्थिति का अनुमान लगाकर सहज रूप से किया जा सकता है। वैसे संसार में कोई भी व्यक्ति अपने आप में पूर्ण रूप से संपूर्ण नहीं होता। हर किसी के जीवन में कोई न कोई कमी खटकती रहा करती है। जिस व्यक्ति में जो कमी होती है, उसकी पूर्णता के आधार पर सामने वाले के कद का आकलन किया जाने लगता है। इस संदर्भ में बेहतर यही होता है कि हम व्यक्ति के सहज मनोविज्ञान को समझते हुए हर समय हर किसी से अपनी अपेक्षा के अनुरूप सम्मान की अपेक्षा न करें।

हमें समझना चाहिए कि क्या पता वर्तमान दौर में हर व्यक्ति कहीं न कहीं उलझा हुआ हो। हर किसी के जीवन में कहीं कोई कमी ऐसी हो जिसके चलते उसका चित्त स्थिर अवस्था में नहीं हो। जिंदगी में अपने लक्ष्य को पाने की बेताबी के चलते वह अपने ही खयालों में खोया हुआ हो। या कि शारीरिक या मानसिक दृष्टि से सामने वाला सामान्य स्थिति में नहीं हो। कुल मिलाकर यदि हम अपनी महत्वाकांक्षाओं को एक पल के लिए विराम देकर सामने वाले की स्थिति पर विचार कर लेवें, तो अनावश्यक रूप से अपने मन को खट्टा होने से बचा सकते हैं। ऐसी दृष्टि विकसित हो जाने पर व्यर्थ के संताप से भी काफी हद तक बचा जा सकता है।

वास्तव में महत्वाकांक्षाओं को हमें जीवन में आगे बढ़ने की ललक के रूप में लेना चाहिए। बेहतर हो यदि हम अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व में निरंतर निखार लाने की दिशा में समर्पित भाव से सक्रिय रहे। इस बात की अपेक्षा नहीं करें कि हमारी स्थिति तथा प्रतिभा को अतिरिक्त सम्मान की नजरों से देखा जाए। अन्यथा अपेक्षित परिणाम न मिलने पर अंतर्मन में निराशा के भाव जागृत होंगे, जिसके चलते प्रगति पथ पर बढ़ते कदम अवरुद्ध हो जाएंगे। अपेक्षा दुख का कारण बने, इसके पहले ही हम अपेक्षा के मनोभाव को ही तिलांजलि दे देवे, तो निश्चित ही अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

वैसे भी वर्तमान दौर की आपाधापी में हर किसी के लिए हर एक समय परिस्थितियां अनुकूल नहीं होती। हर तरफ तगड़ी प्रतिस्पर्धा का माहौल नजर आता है। इसके अतिरिक्त हर किसी को निजी अथवा पारिवारिक समस्याओं का सामना करने के लिए भी बाध्य होना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त कहीं न कही किसी न किसी हद तक अपने कामकाज को लेकर भी तनाव हो सकता है। ऐसे में उससे यह अपेक्षा कैसे की जा सकती है कि वह सामने वाले के गुणों का सम्मान करने के लिए शिष्टाचार की औपचारिकता का निर्वहन करें ही करें। बेहतर हो यदि हम अपने महत्व की छाप औरों पर छोड़ कर प्रशंसा पाने की अपेक्षा वास्तव में अपनी काबिलियत को बढ़ाने की दिशा में ही दृढ़ संकल्पित रहे।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुदर्शन कुमार सोनी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बिन बाबा हम जी न सकेंगे

भारत महान है तो उसकी जनता जनार्दन महानतम है। आर्यावर्त के आदरणीय निवासी गण बिन बाबा कदापि नही रह सकते। कुछ वक्त ही बीता है जब आर्यावर्त दसों दिशाओं में सघनता पूर्वक बाबामय था। सबके अपने अपने साम्राज्य थे। गाड़ियों के काफिले व अभेद सुरक्षा चक्र थे। इनकी निजी सेना तक रहती है देश का कोई कोना कोई शहर नही छूटता था जंहा कि किसी न किसी आदरणीय बाबाजी का दरबार न लगा हो । लोगों की स्वास्थ्यगत घरेलु समस्याओं से लगाकर भूत प्रेत टोना टोटका सबसे छुटकारा दिलाने का जैसे बिना निविदा के ठेका इनके पास था। इनके बाजार की दूरदृष्टि से सजेधजे दरबार में जनता दीवानों की तरह उमड़ती थी। सब ठीकठाक चल रहा था। पर दूसरों का टोटका उतारने वालों पर स्वयं ऐसा उल्टा टोटका लगा कि एक एक करके सबके सब के परत दर परत नये नये स्कैंडल खुलते गये । अधिकांश अपने हमाम के बाहर भी नंगे हो एक एक करके सींखचों के पीछे पंहुच गये। पर जनता जर्नादन का बड़ा वर्ग तो अपने अपने वाले बाबा को परम आदरणीय व निर्दोष फिर भी बताता रहा। उसका तो मानना था कि यह उनके वाले बाबा के साथ उनके विरोधियों व व्यवस्था का रचा एक षड्यंत्र के सिवाय कुछ और नही है ।

देश में आस्था के व्यापार में रूपांतरित हो गये पटल पर एक तरह की रिक्ति छा गयी थी। जनता-जर्नादन भाई परेशान हो गई। उसे इस रिक्ति से घुटन महसूस होने लगी। आस्था व अध्यात्म के मिश्रण से कूट रचित आकाश में सालों से चमकते कई सितारे एकाएक उघाड़े जाकर विलीन जो हो गए थे। जनता की सत्संग व भक्ति भाव के जमावड़े में शरीक होने की जिजीविषा को जैसे ग्रहण सा लग गया। पालिसी पैरालिसिस चल सकती है हमारी जनता को मगर बाबाडम पैरालिसिस वह बर्दाश्त नही कर सकती। उसे जल्दी से जल्दी नये बाबा अवतार चाहिए थे। ऐसा नही है कि जनता ने इंतजार नही किया। खूब किया लेकिन उसके वाले बाबा जी एक मुकदमे से बाहर यदि आ भी जाते तो दूसरे मुकदमें में फिर भीतर हो जाते। आखिर श्रद्धालु जनता का धैर्य चुक गया। वो 'अब बहुत हुआ' कह बिन बाबा अब नही रह सकती थी ।

ऊपर वाले के यहां देर है पर अंधेर नही। एक के बाद एक एक से बढ़कर एक नये नये बाबा अवतार सामने आ गये। कोई कोई दावा कर रहा है तो कोई दावा कर रहा है। जनता-जनार्दन सर्प की तरह मदारी का रूप धारण किये बाबा की चमत्कारी बीन पर पुनः झूम रही है। आस्था के वशीभूत लाखों लोग एक अभिमंत्रित चीज के लिये हजार किलोमीटर दूर से एक स्थान पर भगदड़ का शिकार बनने चैबीस घंटे में इकट्ठे हो जाते हैं। तो कोई इनका चमत्कारी जल पीने के लिए पागल है कोई बाबा जी को छूकर देवत्व की आकांक्षा पाले है दमा की दवाई को एक विशेष दिन ग्रहण करने से दमा छूमंतर का चमत्कार भी आप भूले नही होंगे

आर्यावर्त के लोग बिन बिजली (बिन सड़क) बिन स्वच्छ जल बिन स्वास्थ्य सुविधाओं के रह लेंगे । पर बिना प्रवचन या आस्था या चमत्कार की भूख के तो नही न रह पायेंगे । यदि रह पाते होते तो इत्ती जल्दी रिक्त स्थान कैसे भर जाता। देश विविधताओं से भरा पूरा है। हर पचास कोस में यहां भाषा बदल जाती है। ऐसे ही यहां विविधता भरे बाबा नीम-हकीम हर पचास कोष पर हमेशा विद्यमान रहते हैं। जनता के हर समूह के लिये एक पृथक अनुकूल बाबा हमेशा अवतरित हो उपलब्ध रहता है। ऐसे बाबा भी यहां सिर आंखों पर उठा लिये जाते हैं जो समोसे को अभी तक लाल चटनी से खा रहे हो तो कल से हरी चटनी से खाना जैसी बकवास से दुख व समस्याओं के निवारण का चमत्कारी दावा करते हैं ! जनता भी आंख मूंद कर उस पर भरोसा करती है यह ज्यादा बड़ा चमत्कार है। उस बाबा को यहां समाज को टार्च दिखाने वाला मान लिया जाता है जो सत्संग की भीड़ में टार्च लेकर सुंदर महिलाओं को अपने कुत्सित व कामुक इरादों को पूरा करने चिन्हित करता हो। चंदन तस्कर वीरप्पन ने तो एक समय आत्मसमर्पण की एक शर्त यह भी रखी थी कि उस पर एक फिल्म बनायी जायेगी । पर हमारे एक बाबा जी तो स्वयं ही निर्माता निदेशक बन कर उसी फिल्म के हीरो भी बन गए।

अभी तो एक बाबा जी के जमावड़े ने 125 निर्दोष अंध भक्तों की जान ले बाबा छू मंतर हो गए बाहर ही नही आ रहे । पर ये जनता देखना आप कि अपनों को खोने के बाद भी ये अपने बाबा को नही खोना चाहती। इस जनता को नशा है बाबाओं का उनके धतकर्म सामने आने के बाद भी वह इन्हे नही छोड़ सकती।

जो सींखचों के भीतर हैं उनका जरा इतिहास तो खंगालों। इस देश की महान जनता की याददाश्त अत्यंत क्षुद्र रही है। ये सदैव कदम कदम पर ठगे जाने लुटने पिटने के लिये पूरी शिद्दत से एक पैर पर तैयार बैठी रहती है। खरे को जरा नही पूरा समर्पण कर दो गंगाधर उफ नही करेगा। नक्कालों से सावधान ! इन्ही की बहुलता है ।

गंगाधर यही आशा करता है कि नोटबंदी को भूल चुकी (लॉक डाऊन से मुश्किल से उबरी मंहगाई से हलाकान) मंदी की आशंका के चलते तनाव व भय में जी रही जनता- जनार्दन की आस्था के विश्वास पर अब कोई चोट न पंहुचे।

टी 20 महाविजय

शशांक दुबे

इस जीत से उठे कुछ सवाल

तेरह साल पहले मुंबई के ही वानखेड़े स्टेडियम में 2011 का विश्व कप जीतने के बाद भारत को मिली इस सफलता का क्रिकेटप्रेमी बेसब्री से इंतजार कर रहे। भारत की इस सफलता ने हमारे सामने तीन सवाल खड़े किए हैं। पहला, भारत को मिली इस ऐतिहासिक सफलता के क्या कारण हैं? दूसरा, रोहित और विराट के जाने के बाद अब क्या? तीसरा और अंतिम सवाल यह कि क्या भारत इस सफलता को आगे भी जारी रखते हुए 2025 की चैंपियंस ट्रॉफी, 2026 का टी 20 विश्व कप और 2027 का एक दिवसीय विश्व कप जीत सकने का सामर्थ्य रखता है?

बीते गुरुवार की शाम मुंबई के मरीन ड्राइव पर भारतीय क्रिकेट टीम के विजयी जुलूस में जिस प्रकार से जन सैलाब उमड़ा है, उसने यह तो प्रमाणित कर ही दिया है कि भारत यदि किसी एक चीज के पीछे पागलपन की तरह दीवाना है, तो वह सिर्फ और सिर्फ क्रिकेट ही है। तेरह साल पहले मुंबई के ही वानखेड़े स्टेडियम में 2011 का विश्व कप जीतने के बाद भारत को मिली इस सफलता का क्रिकेटप्रेमी बेसब्री से इंतजार कर रहे। भारत की इस सफलता ने हमारे सामने तीन सवाल खड़े किए हैं। पहला, भारत को मिली इस ऐतिहासिक सफलता के क्या कारण हैं? दूसरा, रोहित और विराट के जाने के बाद अब क्या? तीसरा और अंतिम सवाल यह कि क्या भारत इस सफलता को आगे भी जारी रखते हुए 2025 की चैंपियंस ट्रॉफी, 2026 का टी 20 विश्व कप और 2027 का एक दिवसीय विश्व कप जीत सकने का सामर्थ्य रखता है?

सबसे पहले भारत की जीत के कारणों की बात करते हैं। हालांकि यह बात बिलकुल घिसी पिटी लगेगी, लेकिन यह सच है कि भारत की जीत का सबसे कारण यही है कि नामी सितारों से सुसज्ज यह टीम पूरे टूर्नामेंट में कभी भी एक खिलाड़ी के भरोसे नहीं रही। इस टूर्नामेंट में भारत का पहला कड़ा मुकाबला पाकिस्तान के साथ था। इस मैच में भारत ने 19 रन के भीतर रोहित और विराट जैसे स्टार खिलाड़ियों को खो दिया था और सूर्य कुमार यादव (7 रन), हार्दिक पण्ड्या (7 रन) व जडेजा (शून्य) भी कुछ न कर पाए थे। लेकिन पंत (42 रन) और अक्षर पटेल (20 रन) ने स्कोर को 119 के सम्मानजनक आँकड़े तक पहुंचाया। इस स्कोर को बुमराह और हार्दिक ने क्रमशः 3 और 2 विकेट निकाल कर बचा लिया। अफगानिस्तान से हुए मैच में सूर्य (53 रन) और हार्दिक (32 रन) चले, तो गेंदबाज़ी में बुमराह (3 विकेट) के साथ अर्शदीप (3 विकेट) ने अफ़गान का दम निकाला। बांग्लादेश के साथ मुकाबले में पंड्या (50 रन) और कोहली (37 रन) छाए, तो गेंदबाजी में कुलदीप (3 विकेट) ने दम लगाया। सबसे कठिन प्रतिद्वंद्वी ऑस्ट्रेलिया के साथ मुकाबले में रोहित (92 रन) छाए और सूर्या (31 रन) व दुबे (28 रन) ने उनका साथ निभाया, तो गेंदबाज़ी में एक बार फिर अर्श (3 विकेट) अर्श पर रहे। सेमी फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ रोहित (57 रन) और सूर्या (47 रन) चमके, तो गेंदबाजी में अक्षर और कुलदीप ने 3-3 विकेट लेकर प्रतिपक्षी की कमर तोड़ी। फाइनल में जब रोहित, पंत और सूर्या कुछ न कर सके, तो कोहली ने 76 रन की विराट पारी खेलकर अक्षर पटेल (47 रन) और दुबे (27 रन) की मदद से स्कोर 176 तक पहुंचाया। गेंदबाजी में हार्दिक की चतुराई (3 विकेट), बुमराह की कंजूसी (18 रन डेकर 2 विकेट), अर्शदीप की बहादुरी (2 विकेट) के साथ-साथ सूर्या के कलात्मक कैच ने एक हारी हुई बाजी को जीत में तब्दील कर दिया। निश्चित ही हर बार ऐन मौके पर दो-एक खिलाड़ियों का चल जाना इस बात का प्रमाण है कि भारत स्टार खिलाड़ियों के भरोसे बैठे रहने की मानसिकता से बहुत ऊपर उठ चुका है।

भारत की सफलता का दूसरा कारण टीम में ऑल राउंडर खिलाड़ियों का बहुतायत में होना भी है। यदि हम 1983 के विश्व कप को देखेंगे तो यह पाएंगे कि उसमें कपिल देव, मदन लाल, रोजर बिन्नी, कीर्ति आज़ाद और मोहिंदर अमरनाथ जैसे 5 ऑल राउंडर थे और छः में से 5 जीतों के मैन ऑफ द मैच (दो बार अमरनाथ और कपिल-मदन-बिन्नी एक-एक बार) जैसे ऑल राउंडर ही थे। इस बार भी हमारी कई जीतों के शिल्पकार अक्षर पटेल और हार्दिक पण्ड्या जैसे ऑल राउंडर ही थे। जडेजा हालांकि इस बार सुस्त रहे, लेकिन कई मैचों में उन्होंने अंतिम कुछ गेंदों पर बड़े शॉट लगाकर (ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 5 गेंद में 9 रन; सेमी फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ 9 गेंद पर 17 रन) टीम के स्कोर को गति प्रदान की।

अब रोहित-विराट-जडेजा के जाने के बाद भारतीय टीम का क्या होगा या क्या भारत अपना यह विजयी अभियान जारी रख सकेगा, इन दोनों सवालों का जवाब भारत की बैंच स्ट्रेन्थ में निहित है। आज भारत की बैंच स्ट्रेन्थ कैसी है, यह समझने के लिए इतना जान लेना ही काफी है कि अंतर्राष्ट्रीय फलक पर पिछले कुछ अरसे से चमक रहे शुभमन गिल, ऋतुराज गायकवाड, रिंकू सिंह, ध्रुव जूरेल, संजु सेमसन जैसे कई खिलाड़ियों को विश्व कप में मौका न मिल सका।

दूरगामी टूर्नामेंटों को लेकर भारतीय क्रिकेट प्रबंधन कितना गंभीर रहता है और अपनी बैंच स्ट्रेन्थ किस तरह से मजबूत रखता है, इसके लिए एक उदाहरण देना जरूरी होगा। वर्ष 2020-21 में भारतीय टीम अपने सबसे कठिन दौरे पर ऑस्ट्रेलिया गई थी। पहला टेस्ट मैच उसने पृथ्वी शॉ, मयंक अग्रवाल, पुजारा, कोहली, रहाणे, हनुमा विहारी, ऋद्धिमान साहा, अश्विन, उमेश, बुमराह और शमी के साथ खेला था। पहली पारी में बढ़त के बावजूद भारत दूसरी पारी में मात्र 36 रन का शर्मनाक स्कोर बनाकर हार गया था। निश्चित ही अगले मैच में भारत ने अपनी बैंच स्ट्रेन्थ को आजमाया और कोहली (निजी कारणों से ऑप्ट आउट होने) व पृथ्वी, ऋद्धिमान, शमी को हटाकर शुभमन गिल, पंत, जडेजा व सिराज के साथ मैच खेलते हुए शानदार जीत हासिल की। तभी खिलाड़ी चोटिल होने लगे और भारत ने रोहित और नवदीप सैनी को आजमाया। दांव सफल रहा और भारत पहली पारी में पिछड़ने के बावजूद मैच ड्रॉ कराने में सफल रहा। श्रृंखला के आखिरी मैच तक पहुंचते-पहुंचते भारत के अश्विन, उमेश, बुमराह जैसे गेंदबाज चोटिल हो चुके थे। पाँच गेंदबाज तो चाहिए ही थे। लिहाजा भारत ने नेट पर गेंद फेकने वाले वाशिंगटन सुन्दर, शार्दूल ठाकुर और टी नगराजन को लिया। इन्हीं जाँबाज खिलाड़ियों ने अपना अप्रत्याशित खेल दिखाते हुए भारत को जीत दिलाते हुए ऑस्ट्रेलिया में पहली श्रृंखला जितवाई।

कहना न होगा, भारत की बैंच स्ट्रेन्थ इतनी मजबूत है कि कुछएक खिलाड़ियों के न खेलने, सन्यास लेने, आउट ऑफ फॉर्म होने या चोटिल हो जाने से समग्र टीम को ज्यादा फर्क नहीं पड़ पाएगा। इसलिए भले ही 1983 का विश्व कप जीतने के बाद टी 20 का अगला कप (2007) जीतने में हमने 24 साल लगाए या 2011 का विश्व कप जीतने के बाद इस बार हमने 13 साल लगाए, लेकिन अब हमारी हालत इतनी संवेदनशील नहीं है। उम्मीद करनी चाहिए कि 2025 की चैंपियंस ट्रॉफी, 2026 के टी 20 विश्व कप और 2027 के एक दिवसीय विश्व कप में से कम से कम एक ट्रॉफी तो अपने पास होगी ही। क्या पता हम तीनों ही जीत लें! संभावनाएं अनंत हैं और ऊपर गगन विशाल।

सामयिक

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

शूट बूट वाले बाबा और चरण रज पाने को आतुर भीड़

हाथरस के समीप फुलरई गांव में तकरीबन 121 लोगों (ज्यादातर महिलाएं- बच्चे) की मौतों ने यह सोचने को मजबूर किया है कि आज के आधुनिक युग में भी समाज का बड़ा तबका बाबाओं को कथित भगवान और परमात्मा मानने को आतुर क्यों दिखाई पड़ता है? ऐसा अंधविश्वास और श्रद्धा कि बगैर जान की परवाह किये भारी भीड़ तथाकथित बाबा की चरण रज माथे पर लगाने की होड़ में उमड़ पड़ती है और नतीजतन बड़ी संख्या में बेगुनाह लोग मारे जाते हैं तथा अनेक लोग घायल होकर अस्पताल में भर्ती हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक लगभग ढाई लाख का जमावड़ा हो जाता है जबकि अनुमति कम की ली जाती है। आखिर इतनी भीड़ एकाएक तो जुटी नहीं होगी। ये अंधभक्त लोग बसों और अन्य साधनों से कहीं से तो गुजरकर ही यहाँ पहुंचे होंगे। वहां मौजूद प्रशासन के नुमाइंदों ने इसकी इत्तला अपने आला अधिकारियों तक कैसे नहीं पहुंचाई। ये सब जांच के विषय हैं, न्यायिक जांच घोषित भी कर दी गई है।

इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं और बच्चों की मौतें झकझोर देने वाली है। आश्चर्य इस बात का है कि इतनी बड़ी दुर्घटना के बाद से कथित स्वयंभू बाबा का अता- पता अभी तक नहीं है। इससे बड़े ताज्जुब की बात यह है कि इस दुर्घटना के पहले तक देश भर में इस बाबा को सिर्फ अंध भक्तों के सिवाय कोई जानता भी नहीं था। तब इतने भक्त या अनुयाई जिनमें मध्यप्रदेश, राजस्थान के लोग भी बताये जाते हैं अचानक वहां कैसे एकत्रित हो गये। साथ ही सूरजपाल नाम का मामूली सा पुलिस कांस्टेबल कैसे कथित बाबा नारायण साकार हरि उर्फ भोले बाबा बन गया और इतनी सम्पत्ति तथा संसाधन जुटा लिये यह किसी पहेली से कम नहीं है। सोचिये क्या यह बगैर राज्याश्रय या जिम्मेदारों के कंधे पर हाथ रखे संभव है?

एक वक्त था जब कहा जाता था कि पश्चिमी देश हमें जादू टोने या जादू के करतब दिखाकर लोगों का मनोरंजन करने वालों के रूप में मानते थे। अब क्या ऐसे कथित बाबा, अवतारी और परमात्मा कहलाने वाले ढोंगी बाबाओं की करतूतों की वज़ह से हमें इस तरह पहचाना जायेगा जबकि हम तो विश्व गुरू कहलाना पसंद कर चुके हैं।

एक और महापुरुष ने तो स्वयं कहा है कि वे कथित रूप से बायोलॉजिकल रूप से नहीं जन्मे बल्कि उन्हें तो साक्षात परमात्मा ने सीधे अवतरित किया है।उनके भक्त जन बहुत पहले से यह कहते नहीं थकते कि वे भगवान स्वरूप हैं। ऐसा ही इस सवयंभू बाबा के लिये भी सुना जाता है कि वे स्वयं परमात्मा है जिनके चरणों की धूल माथे लगाकर कथित रूप से धन्य हुआ जा सकता है। सोचें किस हद तक लोगों का ब्रेन वॉश किया गया होगा और इसमें कितना समय लगा होगा।

बड़े से मंच पर शूट बूट और टाई पहनकर यह कथित बाबा भोली भाली जनता को ना जाने क्या ऐसी घुट्टी पिलाते हैं या कि सम्मोहन करते हैं कि अंधभक्त खिंचे चले आते हैं।

वैसे तो हमारे यहाँ ऐसे चमत्कारिक बाबाओं, कथित संत कहलाने वालों, साक्षात प्रभु के अवतार कहे जाने वाले और उनके अंधभक्तों की लंबी श्रंखला रही है। इनमें से कुछ जेलों की हवा भी खा रहे हैं। इनमें ऐसे भी शामिल हैं जो खुद को भगवान कृष्ण की तरह समझने का मुगालता पालकर कथा प्रवचनों जैसे पवित्र और पुण्यकारक, परमार्थिक कार्य को बदनाम करते रहे। उनकी असलियत लोग समझते तब तक उनका भंडाफोड़ हो चुका था। यहां हम उनके नामों का उल्लेख भी नहीं करना चाहते।

अब उत्तर प्रदेश के हाथरस की इस घटना के परिप्रेक्ष्य में जिम्मेदार लोग क्या सबक लेते हैं यह तो आने वाला वक्त ही बतायेगा। लेकिन इतना अवश्य है कि ऐसी घटनाओं, दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति ना हो इसके लिये अवश्य समय रहते कठोर कदम उठाने की जरूरत है।

क्रिकेट विश्व विजय

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

एक साथ उतर आया जज्बा, जोश और जुनून

अपने खिलाड़ियों के प्रति यह जिस तरह का सम्मान है वह बस देखते ही बनता है। अब क्रिकेट का जुनून गांव गांव गली गली और शहर शहर में दिखता है और लोगों के सिर चढ़ कर बोलता है। पहले क्रिकेट खिलाड़ियों का नाम वहीं बता पाते थे जो दिन रात क्रिकेट की कमेंट्री सुनते थे जिनकी दिलचस्पी क्रिकेट में होती या जो क्रिकेट खेलते थे और कहीं न कहीं अपने को क्रिकेट खिलाड़ी की जगह पर रखकर देखते थे । तब यह भी था कि एक खिलाड़ी वर्षों तक खेलता था आज की तरह नहीं था कि कब किस मैच में कौन खेल रहा है और वह अगले मैच में रहेगा या नहीं निश्चित नहीं है फिर भी हर खिलाड़ी को आज बच्चे बच्चे से लेकर बड़े तक सभी जानते हैं। यह एक जज्बा ही है कि सब अपना सब कुछ भुलाकर क्रिकेट के पीछे भाग ही नहीं रहे हैं बल्कि उस खेल को समझ रहे हैं और उसे जी रहे हैं। आज खेल के प्रति हमारी दीवानगी बढ़ी है ।

देश प्रेम, जज्बा और जोश जुनून सब एक साथ मरीन ड्राइव पर उतर आया है । एक तरफ समंदर की लहरें हिलोरें ले रही हैं जोरों का उफान दिख रहा है वहीं दूसरी तरफ मरीन ड्राइव पर जन सैलाब उमड़ पड़ा है । अपने क्रिकेट के नायक को देखने के लिए । उसकी एक झलक को पाने के लिए आंखें टिकी हैं उस दिशा में जिधर से चैम्पियन 2024 के खिलाड़ी आ रहे हैं । हर कोई विश्व विजेता ट्राफी को बस अपनी आंखों में बसा लेना चाहता है । अपने खिलाड़ियों के प्रति यह जिस तरह का सम्मान है वह बस देखते ही बनता है । अब क्रिकेट का जुनून गांव गांव गली गली और शहर शहर में दिखता है और लोगों के सिर चढ़ कर बोलता है । पहले क्रिकेट खिलाड़ियों का नाम वहीं बता पाते थे जो दिन रात क्रिकेट की कमेंट्री सुनते थे जिनकी दिलचस्पी क्रिकेट में होती या जो क्रिकेट खेलते थे और कहीं न कहीं अपने को क्रिकेट खिलाड़ी की जगह पर रखकर देखते थे। तब यह भी था कि एक खिलाड़ी वर्षों तक खेलता था आज की तरह नहीं था कि कब किस मैच में कौन खेल रहा है और वह अगले मैच में रहेगा या नहीं निश्चित नहीं है फिर भी हर खिलाड़ी को आज बच्चे बच्चे से लेकर बड़े तक सभी जानते हैं । यह एक जज्बा ही है कि सब अपना सब कुछ भुलाकर क्रिकेट के पीछे भाग ही नहीं रहे हैं बल्कि उस खेल को समझ रहे हैं और उसे जी रहे हैं । आज खेल के प्रति हमारी दीवानगी बढ़ी है । आज खेल को एक बड़ी उपलब्धि के रूप में जीवन का एक जरिया मानकर जीया जा रहा है। आज केवल मनोरंजन के लिए हम नहीं खेलते बल्कि हमारे भीतर खेल को एक कैरियर के रूप में देखा जा रहा है। जब खिलाड़ी जीत कर लौटता है और उसे एक अलग ही ढ़ंग से देखा और सम्मान दिया जाता है तो उस समय उसका कलेजा बल्लियों उछलता है। वह एक अलग ही खुशी होती है। इस बात को वहीं समझ सकता है जिसकी खेल में सहज रूचि हो और जो खेल को सबकुछ समझता है। जब आप खेल को खेल की तरह लेते हैं तो आपके लिए खेल देश प्रेम का, जीवन के प्रति जोश का एक जज्बा हो जाता है ।

कोई भी खेल क्यों न हो वह टीम भावना से ही जीता जाता है और यह टीम भावना देश के प्रति जज्बा जोश और जुनून का मिला जुला रूप होता है। हर खिलाड़ी अपने श्रेष्ठतम योगदान को अपना सबकुछ समर्पित कर देता है। जब टीम जीतती है तो वह सबका ही सर्वश्रेष्ठ रूप होता है। खिलाड़ी जब खेलते हैं तो उसके पीछे पूरे देश की जनता की भावना जुड़ी होती है। आज खेल बहुत ही फास्ट हो गया है। अब धीमी गति का जमाना नहीं है अब तो सुपर फास्ट गति से खिलाड़ी खेलते हैं। यह सब इस दौर के जज्बे और जोश में एक साथ देखा जा सकता है। आज जब भारतीय क्रिकेट टीम आई पी एल 2024 में विश्व विजेता की ट्राफी को लेकर मुम्बई के बानखेड़े स्टेडियम में आती है और उससे पहले मरीन ड्राइव पर अपने फैंस के बीच से टीम को गुजरते हुए देखना सीधे तौर पर जोश और जुनून के जज्बे को देखना है। यह दृश्यता इस बात को दिखाती है कि भारत में क्रिकेट के प्रति किस स्तर की दीवानगी है। यहां बच्चे बच्चे की जुबान पर सूर्य कुमार यादव, विराट कोहली, बुमराह, हार्दिक पंड्या, रोहित शर्मा तक कोई ऐसा नाम नहीं है जिसके प्रति दीवानगी न देखने को मिले। यह चौराहे से लेकर गली गली और घर घर में टीवी पर धंसी आंखों के बीच इन खिलाड़ियों की उपस्थिति ही आज जन सैलाब के रूप में मरीन ड्राइव पर उमड़ी है और इस जन सैलाब को देखकर यह कहना ही पड़ता है कि ऐसी दिवानगी देखी नहीं।

आदिवासी युवक के साथ मारपीट के विरोध में जयस संगठन, भीम सेना का विरोध प्रदर्शन, चिचोली बंद, थाने का किया घेराव

थाना प्रभारी द्वारा पीड़ित आदिवासी युवक के साथ पक्षपातपूर्ण कार्यवाही करने पर संगठन के लोगों ने किया विरोध

थाना प्रभारी को हटाए जाने की मांग

संजय द्विवेदी, बैतूल। पुलिस प्रशासन की कार्य प्रणाली से नाराज जयस संगठन, भीम सेना द्वारा शुक्रवार को चिचोली बंद का आवाहन कर विरोध प्रदर्शन, नारेबाजी कर चिचोली थाने का घेराव किया। जय स्तंभ चौक से लेकर नगर के मुख्य मार्ग से होकर बाजार चौक स्थित थाना परिसर तक बड़ी संख्या में संगठन के कार्यकर्ता रैली की शक्ल मे थाने तक पहुंचे । यहां कई घटो धरने पर बैठने के बाद पुलिस अधीक्षक के आश्वासन के बाद धरना समाप्त हुआ।

आदिवासी युवक के साथ मारपीट के मामले में आरोपियों पर कार्यवाही व थाना प्रभारी के पक्षपातपूर्ण रवैया को लेकर थाना प्रभारी को हटाने की मांग– जयस के जिलाध्यक्ष संदीप धुर्वे ने राज्यपाल व मुख्यमंत्री के नाम अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी एव एसडीएम राजीव कहार को प्रेषित ज्ञापन में बताया कि रविवार 30 जून को बैतूल-इंदौर नेशनल हाईवे के खापा सोनपुर के समीप पिंटू ढाबे पर मिस्त्री का काम करने वाले राकेश भलावी पर चिचोली क्षेत्र के कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा कांच के गिलास को हथियार बनाकर जान से मारने का प्रयास किया गया। पीड़ित पक्ष पर चिचोली थाना प्रभारी द्वारा पक्षपातपूर्ण कार्यवाही कर पीड़ित पर भी मामला दर्ज कर लिया है। आदिवासी युवक के साथ भेदभावपूर्ण कार्यवाही को लेकर जयस संगठन ने नाराजगी जाहिर करते हुए यह विरोध प्रदर्शन किया।

चिचोली बंद कर नगर में किया विरोध प्रदर्शन – आज चिचोली मे लगातार बारिश के बाद भी संगठन के लोग विरोध प्रदर्शन में शामिल होकर जमकर नारेबाजी करते दिखाई दिए। जयस संरक्षक राजा धुर्वे ने बताया कि संगठन की प्रमुख मांगे यह है कि गत 30.06.2024 को आदिवासी मजदूर राकेश भलावी के साथ मारपीट करने वाले आरोपियों पर धारा-452 की कार्यवाही किये जाने तथा जान से मारने के प्रयास के विरूद्ध धारा -07 की कार्यवाही किया जावे । आदिवासी पीड़ित राकेश भलावी पर जो द्वेषपूर्ण कार्यवाही थाना प्रभारी हरिओम पटेल द्वारा की गई है, उस एफआईआर को तत्काल रद्द किया जावे। थाना प्रभारी चिचोली द्वारा अपने पदीय दायित्वों का दुरुपयोग कर आरोपियों के साथ देने तथा कुटिल कार्यवाही किये जाने को दृष्टिगत रखते हुए तत्काल प्रभाव से निलंबित किये जाने की कार्यवाही की जावे । श्री भलावी के साथ मारपीट करने वाले आरोपियों के विरुद्ध 24 घंटे के भीतर उचित कार्यवाही करने तथा पुलिस प्राथमिकी दर्ज किया जावे। क्षेत्र में हो रहे अवैध शराब की बिक्री पर भी तत्काल रोक लगाई जाकर उचित कार्यवाही किया जावे। उपरोक्त दर्शित मांगो के विरूद्ध त्वरित कार्यवाही किये जाने के सम्बंध में जयस, भीम सेना एवं अन्य समस्त सामाजिक संगठनों के लोगों ने ज्ञापन सौंपा। इस मौके पर राजा धुर्वे जयस संरक्षक, संदीप कुमार धुर्वे जिलाध्यक्ष, रितिक परते उपाध्यक्ष, जामवंत सिंह कुमरे प्रदेश संयोजक, सुनील करोचे, डोमा सिंह कुमरे, रामचरण इरपाचे जिला पंचायत सदस्य, दिलीप पन्द्राम, सोनू धुर्वे सहित बड़ी संख्या में संगठन के लोग मौजूद रहे।

जीप-मोटरसाइकिल भिड़ंत में दो की मौत, एक गंभीर रूप से घायल

तेज रफ्तार ने ली दो की जान, गंभीर घायल महिला जिला अस्पताल में भर्ती

बैतूल। साप्ताहिक बाजार हाट कर अपने गांव लौट रहे तीन लोगों की जीप और मोटरसाइकिल की जोरदार भिड़ंत में दो की मौके पर ही मौत हो गई जबकि एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। सोमवार शाम कोलगांव के पास यह दर्दनाक सड़क हादसा हुआ जिसमें सालारजुन गांव के रहने वाले राजा पांसे (18 वर्ष), मलाई बाई पति धनराज (30 वर्ष), और अंजलि धनराज शामिल थे। तीनों पल्सर मोटरसाइकिल पर सवार होकर अपने गांव सालारजुन लौट रहे थे। तभी आठनेर की तरफ से तेज गति से आ रही महिंद्रा कंपनी की थार जीप (क्रमांक एमपी 48 ZD 4460) से उनकी मोटरसाइकिल की टक्कर हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, टक्कर इतनी जोरदार थी कि थार जीप का बोनट पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और मोटरसाइकिल का सामने का पहिया निकलकर दूर जा गिरा। राजा पांसे और मलाई बाई की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। ग्रामीणों ने बताया कि टक्कर की वजह से मलाई बाई 15 फीट की ऊंचाई से उछल गई और सिर में चोट आने के कारण उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। हादसे के बाद जीप का चालक मौके से फरार हो गया। स्थानीय पेट्रोल पंप के मालिक भानुप्रताप आवठे और हिडली के जिला पंचायत सदस्य रामचरण इरपाचे ने बताया कि टक्कर इतनी भयानक थी कि घटनास्थल पर ही लोगों की भीड़ जमा हो गई। इस हादसे में अंजलि धनराज को गंभीर चोटें आई हैं। उसे तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है।

जमीन पर अवैध कब्जे की गंज थाने में शिकायत

गंज थाना प्रभारी और तहसीलदार से न्याय की गुहार

बैतूल। गंज थाना में जमीन पर अवैध कब्जे की एक गंभीर शिकायत दर्ज की गई है, जिसमें आवेदक सुखदेव अतुलकर ने आरोप लगाया है कि किरण साहू ने जबरदस्ती उनके प्लाट पर कब्जा कर लिया है। सुखदेव ने यह भी बताया कि जब उन्होंने इसका विरोध किया, तो उन्हें गाली-गलौज कर मारपीट की धमकी भी दी गई।सुखदेव ने बताया कि उन्होंने 1998 में प्लाट खरीदा था, लेकिन अब किरण साहू ने उस पर

अपने नाम का बोर्ड और तार फेंसिंग कर दी है। मामले की जांच और न्याय की मांग की जा रही है। सुखदेव अतुलकर ने अपने आवेदन में उल्लेख किया कि उन्होंने वर्ष 1998 में अनिरुद्ध महेंद्र रविंद्र सनद से हमलापुर हल्का नंबर 113.53 में स्थित 1500 स्क्वायर फीट का प्लाट खरीदा था। यह प्लाट उनके नाम पर रजिस्टर्ड है और उसके पास बही और रजिस्ट्री के दस्तावेज भी मौजूद हैं। सुखदेव का कहना है कि किरण साहू ने उनके प्लाट पर जबरदस्ती अपने नाम का बोर्ड लगा दिया और तार फेंसिंग कर दी है। जब सुखदेव ने उनसे कहा कि यह उनका प्लाट है और किरण को कब्जा हटाना चाहिए, तो किरण साहू और उसके पुत्र महेश साहू ने उन्हें गाली-गलौज किया और धमकी दी कि वे यह कब्जा नहीं हटाएंगे। सुखदेव अतुलकर ने तहसीलदार से भी इस मामले में शिकायत की है और गंज थाना प्रभारी से निवेदन किया है कि उनके प्लाट से कब्जा हटवाकर उन्हें न्याय दिलाया जाए।

नवमीं की छात्रा ने की आत्महत्या

बैतूल। कोतवाली थाना क्षेत्र के खेड़ी कनारा में 16 वर्षीय 9वीं की छात्रा ने सुसाइड कर लिया। आत्महत्या का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। अस्पताल पुलिस चौकी ने नाबालिग का पोस्टमार्टम करवाया है। घरवालों के पहुंचने पर उसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल लाया गया। जहां उसकी हालत लगातार नाजुक बनी रही। उसे आईसीयू में भी शिफ्ट किया गया, लेकिन कोई सुधार नहीं हुआ। इलाज के दौरान ही उसकी मौत हो गई। प्रभारी सुरेंद्र वर्मा ने बताया कि छात्रा कल दोपहर करीब 12 बजे गंभीर हालत में लाई गई थी। वह बोल नहीं पा रही थी। इस वजह से छात्रा के मृत्यु पूर्व बयान भी दर्ज नहीं करवाए जा सके हैं। जिसके कारण उसकी मृत्यु का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है।

लाठी को खेल स्पर्धा में शामिल तो किया, लेकिन फंड देने से परहेज

फंड की कमी से लाठी स्पर्धा में भूटान जाने से वंचित रहेंगे बैतूल के बच्चे

बैतूल। हरिद्वार में आयोजित की गई राष्ट्रीय लाठी स्पर्धा में शामिल होने बैतूल जिले से पहुंचे 20 में से 15 बच्चों ने अपने खेल का ऐसा जौहर दिखाया कि भूटान में आयोजित होने वाले साउथ एशियाई स्पर्धा में 20 में से 15 बच्चे बैतूल की जय हनुमान व्यायाम शाला के चयन हो गये है। यह पूरे जिले के लिए गौरव की बात है। लेकिन विडंबना यह है कि 4 से 6 अगस्त को भूटान की राजधानी चिन्यू में आयोजित होने वाली स्पर्धा में शामिल होने के लिए इन होनहार बच्चों के सामने फंड की कमी आ रही है। हालांकि इसके पूर्व हेमन्त खण्डेलवाल ने विधायक ना रहते हुए भी इन बच्चों को ऐसी स्पर्धाओं में शामिल होने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की थी, लेकिन इस बार देश के बाहर आयोजित होने वाली स्पर्धा में ये बच्चे कैसे अपने खेल का जौहर दिखा पाएंगे, यह चिंता का विषय बना हुआ है।

लाठी स्पर्धा में शामिल हुए कोच विनोद बुंदेले ने बताया कि हरिद्वार में आयोजित स्पर्धा में प्रदेश के शहडोल, नर्मदापुरम, ग्वालियर, उज्जैन, आगर-मालवा, हरदा और बैतूल सहित महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, असम, तमिलनाडु व बिहार और राजस्थान से करीब 700 खिलाड़ी शामिल हुए थे। यह गौरव बाकी बात है कि साउथ एशियन चैंपियनशिप के लिए हमारे जिले से 15 खिलाड़ी चयनित किए गए हैं। इन सभी खिलाड़ियों को 4 से 6 अगस्त को भूटान देश की राजधानी थिम्पू में अपने खेल का जौहर दिखाना है। एक खिलाड़ी पर करीब 20 हजार रुपए का खर्च आ रहा है। इस हिसाब से 16 बच्चों पर 3 लाख 20 हजार खर्च होने हैं। चूंकि लाठी स्पर्धा को राष्ट्रीय खेलों में शामिल हुए अभी 3 साल से भी कम का समय हुआ है, इसलिए कम समय होने के कारण अभी तक इस खेल में होने वाले खर्च का प्रावधान खेल एवं युवा कल्याण विभाग में नहीं किया जा सका है।

इन खिलाड़ियों का हुआ चयन– भूटान की राजधानी थिम्पू में आयोजित सेकंड ट्रेडिशनल लाठी चैंपियनशिप में बैतूल के जिन खिलाड़ियों का चयन हुआ है। उनमें वंशिका विनोद बुंदेले, गुंजन,

श्रृष्टि गावंडे, कृतिका राठौर, वंशिका माहेश्वरी, रिसिका दुबे, चेतना माथनकर, रुचि भोंडे, पीयूष उपाध्याय, पार्थ सोनी, आर्यन डोंगरे, यश सावनेर, हर्षित डेहरिया, निधि यादव, उन्नति डिगरसे आदि शामिल है।

समिति के सदस्य सबसे बड़ा सहारा– कोच विनोद बुंदेले ने बताया कि इसके पूर्व भी इस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा था। लेकिन समिति के सदस्यों और विधायक हेमन्त खण्डेलवाल ने बच्चों की प्रतिभा को देखते हुए आर्थिकता सहायता की थी। इसके अलावा समिति से जुड़े प्रमोद अग्रवाल, अशोक दीक्षित, बंटी राठौर, प्रेम शंकर मालवीय, पुनीत खण्डेलवाल, रमेश भाटिया, जगेंद्र तोमर, लल्ली वर्मा, नरेंद्र ठाकुर, विवेक मालवीय, राजसिंह पिंटू परिहार, हेमंत दुबे, नरेश शर्मा, नरेंद्र ठाकुर, राजेश तलरेजा ने खिलाड़ियों को उत्साह बढ़ाने में अपना सहयोग दिया था। श्री बुंदेले ने सभी गणमान्य नागरिकों से भी अपील की है कि स्पर्धा में शामिल होने वाले जिले के इन खिलाड़ियों का मनोबल न टूटने दें। यदि कोई आर्थिक सहायता प्रदान करना चाहता है तो उनका समिति दिल से स्वागत करती है।

नगर परिषद घोड़ाडोंगरी सीएमओ ऋषिकांत यादव के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पारित

जनहित के कार्यों में लापरवाही और भ्रष्टाचार के आरोपों के बीच बड़ा फैसला

बैतूल। नगर परिषद घोड़ाडोंगरी में शुक्रवार को आयोजित पीआईसी की बैठक में नगर परिषद के सीएमओ ऋषिकांत यादव को हटाने का निंदा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। यह प्रस्ताव जनहित के कार्यों में लापरवाही और भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते पारित किया गया बताया जा रहा है। बैठक में ओमप्रकाश पंवार, नगर परिषद कर्मचारी को कार्य से पृथक किये जाने संबंधी आदेश निरस्त कर उन्हें पूर्वानुसार कार्य पर बहाल करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया। वहीं कर्मचारी शिवप्रकाश बिंझाडे की कार्यशैली को देखते हुए उन्हें तत्काल नगर परिषद से हटाने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया।

नगर परिषद घोड़ाडोंगरी अध्यक्ष मीरावंती नंदकिशोर उइके ने बताया कि सीएमओ ऋषिकांत यादव जनहित के कार्यों पर ध्यान नहीं दे रहे थे। उनके खिलाफ आरोप हैं कि वे शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को अनदेखा कर उनका गलत भी उपयोग कर रहे थे। इसके अलावा सीएमओ ऋषिकांत यादव गलत तरीके से नामांतरण किये जाने की प्रक्रिया के आरोप भी लगाए गए, जिसकी शिकायत भी कलेक्टर महोदय से की गई थी। जनप्रतिनिधियों की सामूहिक शिकायत के बाद, कलेक्टर बैतूल ने जांच दल गठित किया था। इस जांच में सीएमओ ऋषिकांत यादव की भारी अनियमितता पाई गई। कलेक्टर द्वारा तत्काल कार्रवाई करते हुए दोषी पाए जाने संबंधी प्रस्ताव आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास भोपाल को प्रस्तुत किया गया। इसके बावजूद सीएमओ ऋषिकांत यादव की कार्यप्रणाली में कोई सुधार नहीं देखा गया, जिसके चलते आज यह निंदा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

महज तीस दिनों में चमत्कार, गांव के 15 युवा अब पाएंगे 18 हजार तक वेतन

बैतूल। जिले में वन विभाग ने चमत्कार ही कर दिया। विभाग की पहल ने गांव के युवाओं को 30 दिनों में ऐसे गुर सिखाए कि वे अब 18 हजार रुपये तक वेतन पाने वाली नौकरी करने लगे हैं। विभाग ने स्वयं इन युवाओं का एक कंपनी में प्लेसमेंट करवाया है। दक्षिण बैतूल (सामान्य) वनमंडल ने ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। डीएफओ विजयानन्तम टीआर के नेतृत्व में वनमंडल ने मुलताई रेंज अंतर्गत ग्राम वन समिति बिसखान के 15 युवाओं को हल्के वाहन चलाने का 30 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया। इस प्रशिक्षण के पश्चात युवाओं को क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय से ड्रायविंग लाइसेंस भी बनवाकर दिए गए।

इस कंपनी में किया प्लेसमेंट– वनमंडल ने वर्धमान कंपनी, मंडीदीप से समन्वय स्थापित कर 3 जुलाई को इन 15 प्रशिक्षित युवाओं का प्लेसमेंट सुनिश्चित किया। अब इन युवाओं को कंपनी में प्रतिमाह 10 हजार से 18 हजार रुपये तक का वेतन मिलेगा। इस महत्वपूर्ण कार्य में एसडीओ मुलताई संजय साल्वे और रेंजर मुलताई नितीन पवार का विशेष योगदान रहा।

कौशल उन्नयन का सफल आयोजन – यह पहली बार नहीं है जब दक्षिण बैतूल (सामान्य) वनमंडल ने ग्रामीणों की आजीविका में सुधार के लिए प्रयास किए हैं। 28 फरवरी को भी वन समिति सदस्यों का कौशल उन्नयन कर उन्हें प्रमाणपत्र प्रदान किए गए थे।

गंबूशिया मछली करेगी मच्छरों के लार्वा को खत्म, तालाबों में छोड़ी जाएगी मछलियाँ

बैतूल। स्वास्थ्य विभाग ने डेंगू व मलेरिया का कारण बनने वाले मच्छरों के पनपने से पहले खात्मा करने का प्लॉन तैयार कर लिया है। विभाग द्वारा तालाबों में मच्छरों को लार्वे को नष्ट करने के लिए गंबूशिया मछली को तालाब में छोड़ा जाएगा। यह मछली पूरे तालाब से मच्छर से निकलने वाले लार्वे को खत्म करेगी। यह मछलियां मच्छर के लार्वे को खा जाती है, जिससे मच्छर नहीं पनपते। मच्छर कम हो जाएंगे तो मलेरिया और डेंगू बीमारी फैलने का भी खतरा नहीं रहेगा।

जिला मलेरिया अधिकारी जितेन्द्र सिंह राजपूत ने बताया कि विभाग द्वारा मलेरिया, डेंगू की बीमारी से निपटने के लिए तैयारियां कर ली है। विभाग द्वारा जिले के विभिन्न तालाबों में गंबूशिया मछलियों को छोड़ा जाएंगा। जहां भी शहर और ब्लॉकों के आसपास में छोटे तालाब है और वहां बारिश में पानी थमा रहता है, ऐसे तालाबों में इन मछलियों को छोड़ा जाएगा। यह मछलियां मच्छरों के लार्वे को खाती है, जिससे तालाब में मच्छर नहीं पनपते। मच्छर नहीं पनपेंगे, तो बीमारियों का भी खतरा कम बना रहेगा। बताया जा रहा है कि एक गंबूजिया मछली एक महीने में 50 से 200 अंडे देती है। जितनी तेजी से मच्छरों का लार्वा बढ़ता है, मछलियों की संख्या भी उसी तेजी से बढ़ती है।

इनका कहना

मच्छरों के लार्वे को खत्म करने के लिए तालाबों में गंबूजिया मछलियों को जल्द ही छोड़ा जाएगा। यह मछलियां मच्छरों के लार्वे को खा लेती है, जिससे मच्छर नहीं पनपते।

-जितेन्द्र सिंह राजपूत,
जिला मलेरिया अधिकारी, बैतूल

शहर के प्रमुख तालाबों में डाली जाएगी मछलियां

मलेरिया अधिकारी श्री राजपूत ने बताया कि गम्बूशिया मछलियों को डालने के लिए शहर के तालाबों को भी चिन्हित किया है। जल्द ही विभाग द्वारा कोठीबाजार स्थित फूटा तालाब, अभिनंदन सरोवर और सदर स्थित काशी तालाब में मछलियों को डाला जाएगा। प्रतिवर्ष इन तालाबों में मछलियों को छोड़ा जाता है, ताकि इन तालाबों में लार्वा नहीं पनपे। यह तीनों तालाब शहर में मौजूद है। इन तालाबों में मच्छरों के खात्मे को लेकर प्लॉन नहीं बनाया तो मच्छरों के पनपने का खतरा बना रहता है। अधिकारियों का कहना है कि इन तालाबों में मछलियों को छोड़ा जाएगा। पहले तो कम मछलियों को छोड़ेंगे, एक महीने के बाद मछलियों की तादाद कई गुना बढ़ जाएगी। यह मछलियां मच्छरों के लार्वे को खाते रहेगी।

लोगों को किया जा रहा जागरूक

जिला मलेरिया विभाग द्वारा मलेरिया और डेंगू से बचने के लिए लोगों को जागरूक भी किया जा रहा है। जागरूकता में बताया जा रहा है कि घर के आसपास बारिश के पानी को जमा न होने दे। कई लोग छतों के ऊपर खाली बर्तन और टायर रखते है, जिसमें बारिश का पानी जमा होने से मच्छरों का लार्वा पनपता है। छत के ऊपर खाली बर्तन न रखने के लिए कहा जा रहा है, ताकि बारिश का पानी जमा न हो।

निजी गौपालक की अमानवीयता, छोड़ा बेसहारा, हुई गौवंश की मृत्यु

बीमार गायों का जिले में एकमात्र सहारा बनी प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार

धार। शहर में निजी गोपालकों द्वारा गायों को सड़क पर छोड़ने की समस्या बढ़ती जा रही है । गोपालकों द्वारा गायों को दिन भर सड़क पर खाने-पीने के लिए छोड़ दिया जाता है एवं सिर्फ दूध निकालने के लिए उसे उपयोग में लिया जाता है । गौपालक के ऐसे ही क्रूर कृत्य से एक गौमाता की कल मृत्यु हो गई । गौपालक ने गर्भावस्था के अंतिम महीने में गाय को जानकी नगर धार में आवारा की तरह छोड़ दिया था । मसीह स्कूल के पास गाय ने दिन में एक बछड़ी को जन्म दिया, स्थानीय निवासियों के सूचित करने पर नगर पालिका के कर्मचारी वहां आए व सरकारी पशु एंबुलेंस के द्वारा इलाज करवाया गया ।

शाम तक गाय पीड़ा से कराहती रही व जन्मी बछड़ी का भी गौपालक कोई सुध लेने नहीं आया, स्थानीय रहवासियों ने ही गाय व बछड़ी के आहार आदि का ध्यान रखा ।

देर शाम को रहवासियों की सूचना पर प्रकृति वात्सलय गौशाला की टीम स्थल पर पहुँची व गौमाता को असहनीय दर्द में देखकर (उनका गर्भाशय व आँतें बाहर निकली हुयीं थीं) पशु चिकित्सालय के डॉक्टर्स को बुलवाकर इलाज करवाने की भरसक कोशिश की गई किन्तु गौमाता की मृत्यु हो गयी । नन्ही सी बछड़ी को गौशाला के संरक्षण में लाया गया ।नगर पालिका के कर्मचारियों, स्थानीय रहवासियों व पशु चिकित्सालय के डॉक्टर्स का सहयोग रहा ।

निजी गौपालकों की ऐसी क्रूर लापरवाही जिसमे गौमाता को गर्भावस्था के अंतिम महीने में सड़क पर आवारा की तरह छोड़ देना क्रूरता है ? अमानवीयता की हद कि ये गौवंश को ना ही चराने ले जाते हैं बल्कि सड़कों पर गंदगी व थैलियां खाने को विवश कर देते हैं । ऐसे में प्रकृति वात्सल्य गौशाला एक ऐसा आश्रय है जिसमें बीमार, अनाथ, वृद्ध अथवा दुर्घटनाग्रसित गौवंश का इलाज किया जाता है । बीमार गायों का जिले में एकमात्र सहारा बनी प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार आशा की किरण बन रही है इन मूक प्राणियों के लिए।

सड़कविहीन गांव में सरकारी वादों की हकीकत

महिला को प्रसव के बाद खटिया पर 7 किमी तक ले जाना पड़ा सड़क पर

बैतूल। जिले के भीमपुर ब्लॉक की ग्राम पंचायत चिल्हौर के ग्राम भयपुर में एक महिला को प्रसव के बाद भीमपुर शासकीय अस्पताल ले जाने के लिए खटिया पर 7 किलोमीटर तक ले जाना पड़ा। यह घटना भाजपा के विकास के दावों की पोल खोलती है, जहां जिले के पांच विधायक और एक सांसद होने के बावजूद यह स्थिति बनी हुई है।

बैतूल जिले के भीमपुर ब्लॉक के चिल्हौर के पास भवानीपुर ग्राम में प्रसव के दौरान सोनाए बाई नामक महिला ने दो बच्चों को जन्म दिया। भारी बारिश के चलते सभी रास्ते बंद हो गए थे, जिसके कारण गांव की महिलाओं ने मिलकर घर पर ही उसका प्रसव कराया। महिला और उसके नवजात शिशुओं को अस्पताल पहुंचाने के लिए एंबुलेंस बुलाने का प्रयास किया गया, लेकिन गांव तक पक्की सड़क न होने के कारण एंबुलेंस वहां नहीं पहुंच सकी। अंततः ग्रामीणों ने लकड़ियों और खटिया की सहायता से महिला को कंधे पर उठाकर 7 किलोमीटर तक चलकर चिल्हौर पहुंचाया, जहां से उसे एंबुलेंस उपलब्ध कराई गई। भीमपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में उपचार के बाद महिला को जिला चिकित्सालय रेफर किया गया। यह दूसरी बार है जब भवानीपुर गांव में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हुई है। गांव में पक्की सड़क न होने के कारण पहले भी कई बार माताओं और बच्चों को जान गंवानी पड़ी है।

झूठे विकास का आईना दिखा रही यह तस्वीर- यह घटना भाजपा सरकार के विकास के खोखले वादों का सच सामने लाती है। बैतूल जिले में भाजपा के पांच विधायक और एक सांसद हैं, बावजूद इसके गांव की सड़कें अब तक नहीं बन सकी हैं। सरकार जहां एक ओर विकास के ढोल पीट रही है, वहीं दूसरी ओर बैतूल जिले में विकास की यह तस्वीर सरकार को उनके झूठे विकास का आईना दिखा रही है। इस घटना ने एक बार फिर से यह सवाल खड़ा किया है कि क्या सच में विकास का लाभ गांवों तक पहुंच पा रहा है? क्या सरकारी योजनाएं और वादे सिर्फ कागजों तक ही सीमित रह गए हैं? यह घटना सरकार के दावों और वास्तविकता के बीच की खाई को स्पष्ट रूप से दिखाती है। यह स्थिति सरकार के लिए एक गंभीर चेतावनी है कि विकास के वास्तविक मायने क्या होते हैं और आम जनता को इन सुविधाओं से वंचित नहीं रहना चाहिए।

कलेक्टर ने मुलताई बीएमओ को हटाया

डॉ. पंचम सिंह ने किया ज्वाइन, जल्द संभालेंगे कार्यभार

बैतूल। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुलताई में पदस्थ बीएमओ डॉक्टर अभिनव शुक्ला को बैतूल जिला कलेक्टर के आदेश पर जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा हटा दिया गया है। वही उनके स्थान पर बैतूल के सेहरा में पदस्थ डॉ पंचम सिंह को मुलताई बीएमओ नियुक्त किया गया है। उन्होंने गुरुवार मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचकर जॉइनिंग भी ले ली है। उन्होंने मुलताई पहुंचकर अस्पताल का निरीक्षण भी किया और समस्त स्टाफ एवं कर्मचारियों से चर्चा कर आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सहयोग करने की अपील की है। उन्होंने बताया कि उनकी प्राथमिकता रहेगी समय की पाबंदी, मरीजों के साथ अच्छा व्यवहार और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना! वहीं जब इस संबंध में डॉ अभिनव शुक्ला से बात की गई तो उन्होंने कहा कि उन्हें अभी इस संबंध में कोई आदेश प्राप्त नहीं हुए हैं। उनका स्वास्थ्य खराब है और वह जिला चिकित्सालय में अपना उपचार करवा रहे हैं। जबकि बैतूल जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रविकांत उईके ने बताया कि बैतूल जिला कलेक्टर को मुलताई के जनप्रतिनिधियों और आमजन द्वारा लगातार शिकायतें मिल रही थी। जिस पर कार्यवाही करते हुए मुलताई बीएमओ को हटाने के निर्देश मिले थे। जिस पर डॉ. अभिनव शुक्ला को उनके मूल पदस्थापना पर भेज दिया गया है। उनके स्थान पर सेहरा अस्पताल में पदस्थ डॉ. पंचम सिंह को मुलताई बीएमओ नियुक्त किया गया है।

अपने मूल विभाग में कब भेजे जाएंगे कर्मचारी

नरसिंहपुर। जिले में विभिन्न विभागों से आपस में कर्मचारियों की सेवायें अपने मूल विभाग से हटकर अन्य विभागों में अटेचमेंट के नाम कर्मचारी लगे है इनमें ज्यादा कर्मचारियों की बल्ले -बल्ले हो रही है परंतु जिस विभाग का कर्मचारी अन्य विभाग में अस्थायी संविलियन किया गया है अब वह कर्मचारी अपने मूल विभाग में जाना नहीं चाहता है । इसका सबसे बडा उदाहरण चुनावों में कार्य हो जाने के बाद भी,विभागीय स्तर पर कर्मचारियों के संविलियन को लेकर अनेक बार मूल विभाग में पदस्थ किये जाने माँग उठाई जाती रही है। बावजूद इसके इस तरह के मामलों में प्रशासनिक स्तर पर न त्वरित कार्रवाई की जाती है और न ही विभागीय स्तर पर होने वाले काम- काज के प्रभावित होने को गम्भीरता से लिया जाता है। नरसिंहपुर जिले में शिक्षा विभाग के अनेक शिक्षकों को जिला प्रशासन के अनेक विभागों में कार्य करने हेतु पदस्थ किया गया है। लम्बा समय बीत जाने के बाद भी ऐसे कर्मचारियों के उनके मूल विभाग में न होने से विभाग का काम-काज कई स्तर पर प्रभावित भी हो रहा है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि विभागीय स्तर पर काम-काज का संचालन प्रभावी रूप से हो सके इस हेतु ऐसे मामलों में शीघ्र कार्रवाई किया जाना अपेक्षित है।

व्हीव्हीपीएटी से पेपर रोल एवं एड्रेस टैग हटाये जाने की कार्यवाही 5 जुलाई से

नरसिंहपुर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतगणना के उपरांत व्हीव्हीपीएटी से थर्मल पेपर रोल और एड्रेस टैग हटाये जाने की कार्यवाही 5 जुलाई से प्रारंभ की जा रही है, जो कार्यालयीन समय में कार्य समाप्ति उपरांत निरंतर चलेगी। इस अवधि में प्रतिदिन प्रातः 10.30 बजे सांय 5.30 बजे तक ईव्हीएम वेयर में बनाये गये व्हीव्हीपीएटी स्ट्रांग रूम को खोला और बंद किया जायेगा। इस संबंध में अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने 5 जुलाई से कार्य समाप्ति तक प्रातः 10.30 बजे एवं सायं 5.30 बजे ईव्हीएम वेयर हाउस में बनाये गये व्हीव्हीपीएटी स्ट्रांग रूम को खोलने और बंद किये जाने तथा कार्य के दौरान संबंधित अभ्यर्थियों और संबंधित पार्टी के जिलाध्यक्ष से उपस्थिति की अपेक्षा की है।

ई स्कूटर के लिए अनुदान योजना

नरसिंहपुर। भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के अंतर्गत पंजीकृत श्रमिकों के लिए भवन एवं अन्य संनिर्माण ई- स्कूटर के लिए अनुदान योजना चलाई जा रही है। इस योजना का उद्देश्य पंजीकृत भवन एवं अन्य संनिर्माण श्रमिकों को उनके कार्यस्थल तक आवागमन के लिए ई-स्कूटर वाहन क्रय करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना है। योजना अंतर्गत हितलाभ के लिए मप्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल अंतर्गत पंजीकृत श्रमिक वास्तविकता में निर्माण श्रमिक हो एवं 5 वर्ष तक सतत् रुप से वैद्य पंजीयन होना चाहिए।

गंधवानी विधानसभा में प्रथम आगमन पर केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर का हुआ भव्य स्वागत

मिशन शक्ति कार्यक्रम में की शिरकत, हजारों मातृशक्ति भी हुई उपस्थित

धार। महिला एवं बालविकास मंत्रालय में केंद्रीय राज्यमंत्री एवं धार महू लोकसभा सांसद सावित्री ठाकुर के गंधवानी विधानसभा में प्रथम आगमन पर क्षेत्रवासियों ने गर्मजोशी से स्वागत किया भारी बारिश के बाद भी केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने लोगो के घर जाकर अभिवादन किया। सावित्री ठाकुर का काफिला गंधवानी विधानसभा में प्रवेश किया वैसे ही अवलदामान,खड़की के ग्रामीणजनों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। गंधवानी के नित्यानन्द आश्रम परिसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधा लगाया साथ ही गुरुभक्तों ने दीदी का स्वागत कर सम्मान किया। सामाजिक संस्था एवं वरिष्ठजनों ने मंच लगाकर जगह-जगह सत्कार किया भाजपा कार्यकर्ताओं ने भी अपने मण्डल क्षेत्र में स्वागत मंच लगाकर सावित्री ठाकुर का स्वागत किया।

गायत्री शक्तिपीठ जाकर उन्होंने मां गायत्री के चरणों मे शीश झुकाकर नमन किया । गायत्री ट्रस्ट गंधवानी ने भी सम्मान किया । भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर मध्यप्रदेश सिर्वी समाज,क्षत्रिय राठौड़ समाज,जैन समाज,सेन समाज,अनुसूचित जाति,जनजाति समाज के बन्धुओ ने स्वागत किया। मध्यप्रदेश जनअभियान परिषद, नवांकुर संस्था माँ नर्मदादेवी स्वास्थ्य समिति,शासकीय महाविद्यालय जनभागीदारी समिति,श्रीराम जिनिंग,भांजा इंटरप्राइजेस,ग्राम पंचायत,पुलिस परिवार,कलाल समाज,प्रजापत समाज आदि ने आत्मीय अभिनन्दन किया। ततपश्चात केंद्रीय मंत्री विभागीय कार्यक्रम मिशन शक्ति अंतर्गत महिला सम्मेलन में शिरकत की। जिला पंचायत अध्यक्ष सरदारसिंह मेडा एवं भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज सोमानी ने भी विचार रखे। मुख्य वक्ता एवं केंद्रीय राज्य मंत्री ने भाजपा सरकार द्वारा चलाई जा रही महिला एवं बालविकास की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री की तारीफ करते हुए कहा मोदी लखपति दीदी बनाने के लिए अभी तीन करोड़ महिलाओं के लिए योजना बना चुके है उन्होंने कहा महिलाओं के उत्थान हेतु ऐसी अनेक योजनाओं के माध्यम से लाभ पहुचाने का काम किया है । मैं स्वयं एक साधारण परिवार की महिला हूँ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ी हूँ हमारे देश की राष्ट्रपति द्रोपती मुर्मू भी एक आदिवासी महिला है हमारे राज्यपाल भी आदिवासी है इसलिए भारतीय जनता पार्टी की सरकार के मुखिया मोदी जी सबको आगे बढ़ाने का काम कर रहे है। अभी 100 दिन के मिशन पर सरकार काम कर रही है जितना हो सकेगा में आपकी बात मोदी जी और हमारे मुख्यमंत्री तक पहुँचाऊंगी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुई । भाजपा कार्यकर्ताओं ने समरसता भोज का आयोजन किया। इसके बाद राज्यमंत्री बलवारी धाम के लिए बालाजी दर्शन पहुँची। जिला भाजपा अध्यक्ष मनोज सोमानी, पूर्व जिला अध्यक्ष विनोद शर्मा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल, जिला उपाध्यक्ष निलेश भारती और विश्वास पाण्डे, भाजपा नेता जगदीश जाट, सदाशिव बर्फ शिवपाल आर्य, मंडल अध्यक्ष सहित स्थानीय भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भारतीय न्याय संहिता जागरूकता शिविर तिलक वार्ड की आंगनबाड़ी में हुआ सम्पन्न

नरसिंहपुर। हब फॉर एंपावरमेंट वुमेन के 100 दिवसीय जागरूकता अभियान अंतर्गत महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मोहनी जाधव के निर्देशन में तिलक वार्ड की आॅगनबाड़ी क्रमांक 01 में भारतीय न्याय संहिता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं को पीसीपीएनडीटी एक्ट, महिला अधिकारों व महिला हेल्प लाइन 181 व एक जुलाई 2024 से लागू हुए 3 नये कानूनों के बरे में जानकारी देकर महिलाओं को जागरूक किया। कार्यक्रम में पूर्व बाल कल्याण समिति अध्यक्ष श्रीमती संध्या कोठारी, श्रीमती ललिता त्रिवेदी सहित अन्य महिलाएं व बालिकाएं मौजूद थी।

अंशकालीन कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

वेतन बढ़ाने और स्थाई करने की मांग

बैतूल। पंचायतों के अंशकालीन कर्मचारियों ने आज न्यूनतम वेतन और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को स्थाई कर्मी बनाने के लिए प्रदर्शन किया। उन्होंने रैली निकाली और कलेक्ट्रेट पहुंचकर डिप्टी कलेक्टर को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ग्राम पंचायतों के चौकीदार, भृत्य, पंप आपरेटर, स्कूलों, छात्रावासों के अंशकालीन कर्मी, योग प्रशिक्षक, मोबिलाइजर रैली में शामिल रहे। उन्होंने मांगे न माने जाने की स्थिति में आंदोलन छेड़ने की चेतावनी दी है। कर्मचारियों ने उन्हें दिए जा रहे कम वेतन को बेहद न्यूनतम और इसे सरकार के लिए शर्मनाक बताया।

यह है मांगें

1. शिक्षा विभाग और आदिम जाति विभाग के स्कूलों, छात्रावासों सहित सभी विभागों में कार्यरत अंशकालीन, अस्थाई, ठेका, आउटसोर्स और दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले कर्मचारियों को न्यूनतम वेतन दिया जाए।

2. चतुर्थ श्रेणी के पद पर स्थाई कर्मी बनाया जाए।

3. आयुष विभाग के योग प्रशिक्षकों को भी न्यूनतम वेतन दिया जाए।

4. ग्राम पंचायतों में कार्यरत भृत्य, चौकीदार, नल चालक, पंप आपरेटर, कंप्यूटर आपरेटर को न्यूनतम वेतन दिया जाए।

20 साल से नहीं हुई भर्ती

संघ के अध्यक्ष वासुदेव शर्मा ने बताया की प्रदेश में हजारों अस्थाई कर्मचारी चतुर्थ श्रेणी के पदों पर पिछले 15-20 सालों से काम कर रहे हैं। जिन्हें 2-5 हजार रुपए मासिक वेतन ही मिलता है। दरअसल, प्रदेश में 20 साल से चतुर्थ श्रेणी के पदों पर भर्ती नहीं हुई है। सभी विभागों में चतुर्थ श्रेणी के लाखों पदों रिक्त है। जिन पर अंशकालीन, अस्थाई, आउट सोर्स और ठेका कर्मचारी काम करते हैं।

यह सभी कर्मचारी समाज के गरीब, मजदूर और कमजोर परिवारों से आते हैं। चतुर्थ श्रेणी की छोटी सी सरकारी नौकरी का सपना लेकर सरकारी विभागों में नौकरी करने पहुंचे लघु वेतन कर्मचारी की नौकरी में न स्थायित्व है और न ही सम्मान जनक वेतन। इन्हें सरकार का घोषित न्यूनतम वेतन तक नहीं मिलता है। जिस वजह से कार्यरत लाखों अल्प वेतनभोगी कर्मचारी आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं।

जन शिक्षा केंद्र स्तर पर उल्लास नव भारत साक्षरता प्रशिक्षण संपन्न

नरसिंहपुर। जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण समिति अध्यक्ष कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले के निर्देशन एवं सीईओ जिला पंचायत दलीप कुमार के मार्गदर्शन में जिला, विकासखण्ड, जनशिक्षक केन्द्र स्तरीय, एक दिवसीय उल्लास नव भारत साक्षरता उन्मुखीकरण सह प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत जनपद शिक्षा केंद्र नरसिहपुर के समस्त जन शिक्षा केंद्र पर जिला परियोजना समन्वयक डॉ. आरपी चतुर्वेदी के निर्देशानुसार जन शिक्षा केंद्र पीएमश्री एमएलबी कन्या हायर सेकेण्डरी स्कूल में जन शिक्षा केंद्र प्रभारी श्रीमती गायत्री सोनी, जिला सह समन्वयक साक्षरता श्री अखलेश राजोरिया की उपस्थिति में जन शिक्षक श एचपी कोरी, राजकुमार कुशवाहा संकुल सह समन्वयक श्री एलपी गिरदोनिया द्वारा उल्लास नव भारत साक्षरता की विस्तृत जानकारी संकुल अंतर्गत सामाजिक चेतना केंद्रों के नोडल अधिकारी को बैठक के दौरान दी गई। जिला परियोजना सह समन्वयक अखलेश राजोरिया द्वारा असाक्षरों के आनलाइन सर्वे कर अक्षरसाथी के माध्यम से विधिवत रिकार्ड संधारित कर विधिवत केंद्र संचालन हेतु क्या प्रयास किए जाने चाहिए सेअवागत कराते हुए नोडल अधिकारी के केंद्र स्तर पर आने वाली कठिनाइयों हेतु सुझावत्मक निराकरण किया। जनशिक्षा केंद्र हाई स्कूल रोंसरा में प्राचार्य सुश्री रश्मि राय, जनशिक्षक आरपी शर्मा, संजय मेहरा, संकुल सह समन्वयक देवेन्द्र पटेल द्वारा नोडल अधिकारियों को उल्लास नव भारत साक्षरता कार्यक्रम अंतर्गत 15 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के समस्त असाक्षरों जिन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता का ज्ञान नही हैं या कोई साक्षरता का प्रमाण पत्र नहीं है ऐसे व्यक्तियों का सर्वे, एप पर नामांकन की विस्तृत जानकारी दी गई। जन शिक्षा केंद्र गोरखपुर में बीआरसी ओपी राय, बीएसी ब्रजेश नेमा, श्री रविशंकर ठाकुर, प्राचार्य पंचम सिंह झारिया, जन?शिक्षक मधुसूदन दुबे, संकुल सह समन्वयक नरेश कुमार चौबे द्वारा नव भारत साक्षरता के विधिवत क्रियान्वयन हेतु सभी नोडल अधिकारियों को विस्तृत जानकारी दी गई। बीआरसी ओपी राय ने कार्यक्रम की प्रस्तावना, साक्षरता दर, कार्यक्रम उद्देश्य, लक्ष्य, क्रियान्वयन, सामाजिक चेतना केंद्रों के संचालन, चेतना केंद्रों की मॉनिटरिंग, अक्षर साथी का रजिस्ट्रेशन, अक्षर साथी के कार्य मे सहयोग, बाल पोथी, पठन पाठन सामग्री का उपयोग, वातावरण निर्माण, बुनियादी साक्षरता मूल्यांकन परीक्षा, अन्य विभागों से प्राप्त होने वाले सहयोग तथा राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण पर विस्तृत जानकारी दी गई। बीएसी ब्रजेश नेमा ने कहा कि ग्राम बसाहट में कोई भी लाडली बहना असाक्षर ना रहे, सर्वे कार्य को गंभीरता से पूर्ण कर सामाजिक चेतना केंद्रों का अक्षर साथी के सहयोग से विधिवत संचालन कर आगामी माह में होने वाली साक्षरता परीक्षा में शत प्रतिशत लाडली बहना को साक्षर करने के लक्ष्य को हासिल करना है। जनशिक्षा केंद्र के सभी प्राथमिक, माध्यमिक, एकीकृत शालाओं के प्रधानपाठकों की उपस्थिति रही।

हरियाली अमावस्या पर किया पौधा रोपण

बैतूल। हरियाली अमावस्या पर शुक्रवार को नगर पालिका परिषद द्वारा सुभाष वार्ड स्थित रामवन में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान रामवन में लगभग 50 औषधीय एवं फलदार पौधों का रोपण कर उनकी देखभाल किए जाने का संकल्प लिया गया। तत्पश्चात जल संरक्षण के उद्देश्य से लोगों ने श्रमदान कर सीता कुण्ड के गहरीकरण का कार्य किया। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर ने कहा कि हरियाली अमावस्या पर पौधारोपण का शास्त्रों में विशेष महत्व है। यह हमे पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है, क्योंकि ये श्रावण मास में आती है और यह वर्षा ऋतु का समय होता है। इस ऋतु में निरंतर वर्षा होने से प्राकृतिक संतुलन बनता है और चारों ओर हरियाली होती है। इस अवसर पर नपा उपाध्यक्ष महेश राठौर, जि.योजना समिति सदस्य आनंद राठौर, पार्षदगण, नपा अधिकारी, कर्मचारी सहित ग्रीन टाईगर्स के सदस्य उपस्थित रहे।

थद्धाराम ज्ञानचंदानी की स्मृति में एम्स में भोजन सेवा

जनसंवेदना अन्नपूर्णा भोजन चलित सेवा ने पुड़ी, सब्जी और मिठाई बांटी

भोपाल (नप्र)। थद्धाराम ज्ञानचंदानी की स्मृति में शुक्रवार को थधाराम ज्ञानचंदानी फाउंडेशन द्वारा एम्स भोपाल में भोजन वितरण किया गया। भोजन सेवा जनसंवेदना के माध्यम से आयोजित की गई। जिसमें मरीजों, परिजनों और जरूरतमंदों को पुड़ी, सब्जी और मिठाई बांटी गई।

डॉ. महेंद्र सिंह होंगे भाजपा के मध्यप्रदेश प्रभारी, सतीश उपाध्याय सहप्रभारी नियुक्त

भोपाल (नप्र)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने डॉ. महेंद्र सिंह को मध्यप्रदेश भाजपा का प्रभारी बनाया गया है। वहीं, सतीश उपाध्याय को सहप्रभारी नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही, नड्डा ने अन्य राज्यों में प्रभारियों की नियुक्ति की है। बता दें कि दोनों को मध्यप्रदेश लोकसभा चुनाव का भी प्रभारी और सहप्रभारी बनाया गया था।

स्ट्रीट डॉग के हमले में एक्टिवा से गिरे दो बच्चे

एक बच्चे के सिर में टांके आए ; उज्जैन में मां के साथ स्कूल जा रहे थे

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में स्ट्रीट डॉग के हमले में बैलेंस बिगड़ने से एक्टिवा पर बैठे दो बच्चे गिर गए। वह अपनी मां के साथ स्कूल जा रहे थे। दोनों बच्चों को गंभीर चोटें आई हैं। एक बच्चे के सिर में टांके लगाने पड़े। घटना गुरुवार सुबह की है। इसका सीसीटीवी फुटेज आज सामने आया है।

शहर के नमक मंडी क्षेत्र में भी एक शख्स पर तीन स्ट्रीट डॉग ने हमला कर दिया। असगर अली (45) जान बचाकर भागे। इस दौरान वे गिर पड़े, उनके सिर में चोट आई है। परिजन उन्हें जेके अस्पताल में भर्ती कराया है। बता दें, पिछले हफ्ते ही महाकाल मंदिर में दिल्ली से आई महिला श्रद्धालु पर भी स्ट्रीट डॉग्स ने हमला किया था। गाड़ी के बैलेंस बिगड़ते ही पीछे बैठे दोनों बच्चे गिर गए। एक बच्चे का सिर सड़क किनारे रखे गमले से टकराया।

घबराकर गाड़ी की स्पीड बढ़ाई, बैलेंस बिगड़ते ही गिरी- नागरची बाखल में रहने वाली फातिमा दानिश गुरुवार सुबह 7 बजे अपने दो बच्चों को एक्टिवा से स्कूल छोड़ने जा रही थी। अब्दुल कादिर दानिश (11) और बुरहान दानिश (7) गाड़ी पर पीछे बैठे थे। डाबरीपीठा इलाके से गुजरने के दौरान रास्ते पर बैठे स्ट्रीट डॉग एक्टिवा के पीछे दौड़े और हमला करने की कोशिश की।

घबराकर फातिमा ने स्पीड तेज कर दी। स्ट्रीट डॉग भी गाड़ी के पीछे भागने लगा। फातिमा का बैलेंस बिगड़ गया और गाड़ी गमले से टकरा गई। पीछे बैठे दोनों बच्चे गिर गए। फातिमा के बड़े बेटे का सिर गमले से टकराया, जिससे उसे गंभीर चोट आई है। बच्चों की रोने की आवाज सुनकर रहवासी मदद के लिए पहुंचे। फातिमा ने परिजन को कॉल किया और बच्चों को अस्पताल ले गई।

शिकायत के बाद भी कोई निराकरण नहीं हुआ- फातिमा ने बताया कि घर के सामने भी स्ट्रीट डॉग का झुंड बैठता है। बच्चे घर से बाहर निकलने से डरने लगे हैं। हमने सीएम हेल्पलाइन में इसकी शिकायत की है। कई बार नगर निगम में भी शिकायत की जा चुकी है, लेकिन कोई हल नहीं निकला है।

यात्री से रिश्वत ले रहे थे टीटीई

साथी ने बनाया वीडियो, रेल एप मदद पर किया अपलोड ; डीआरएम ने किया सस्पेंड

जबलपुर (नप्र)। पश्चिम मध्य रेलवे के जबलपुर मंडल में पदस्थ एक टीटीई का यात्री से रुपए लेते हुए का वीडियो सामने आया है। यह वीडियो जब रेलवे के अधिकारियों तक पहुंचा तो टीटीई पर कार्रवाई करते हुए डीआरएम ने उन्हें सस्पेंड कर दिया है। टीटीई का नाम नागेन्द्र कुमार है, जो कि स्लीपर में यात्री को सीट देने के लिए 200 रुपए ले रहा था। यात्री से रुपए लेने का वीडियो पास ही बैठे एक यात्री ने बनाया और फिर उसे रेल मदद एप पर अपलोड कर दिया। वीडियो जब रेलवे के अधिकारियों तक पहुंचा तो इस गंभीर लापरवाही मानते हुए टीटीई नागेन्द्र कुमार को निलंबित करते हुए जबलपुर डीआरएम ऑफिस में अटैच किया गया है। रेल अधिकारियों का कहना है कि रेल मंत्रालय ने यात्रियों की सुविधाओं को लेकर रेल मदद एप बनाया है, जिसमें आने वाली शिकायतों को गंभीरता से लिया जा रहा है।

दरअसल गुरुवार को प्रयागराज से मुंबई जा रही ट्रेन में टीटीई नागेन्द्र कुमार की ड्यूटी लगाई गई थी। ट्रेन में जब नागेन्द्र यात्रियों की टिकट चेक कर रहे थे, उस दौरान एक यात्री जिसके पास जनरल डिब्बे की टिकट थी, वह स्लीपर कोच में आकर बैठ गया था। ट्रेन प्रयागराज से मुंबई के लिए चली तो टीटीई पहुंचे और एक यात्री की टिकट चेक करते हुए उस पर कार्रवाई करने की बात कहने लगे। यात्री ने कहा कि उसे सतना तक जाना है। टीटीई ने पहले पांच सौ रुपए देने को कहा, इसके बाद उन्होंने कहा कि आप 200 रुपए दे दीजिए, सतना तक ही इंतजार करूंगा, उसके आगे गए तो फिर तुम्हारी टिकट बना दी जाएगी। टीटीई और यात्री के बीच करीब दो मिनट तक बात चली, जिसका कि एक यात्री ने वीडियो भी बना लिया था। रेल एप के माध्यम से शिकायत सामने आते ही डीआरएम ने टीटीई नागेन्द्र को निलंबित कर दिया है।

पश्चिम मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी हर्षित श्रीवास्तव ने बताया कि रेलवे ने यात्रियों की सुविधाओं के लिए रेल मदद एप को इजात किया है, इस एप के माध्यम से यात्री सफर के दौरान किसी भी समस्या को लेकर शिकायत कर सकते है। टीटीई नागेन्द्र कुमार के खिलाफ इसी एप के माध्यम से शिकायत मिली थी। रेल मंत्रालय के निर्देश पर हर मंडल में शिकायत का निराकरण के लिए वार रूम बनाया गया है। जहां पर आने वाले यात्रियों की शिकायत को दर्ज किया जाता है। लगातार यात्रियों के द्वारा अतिरिक्त पैसा लेने और सीट देने की भी शिकायत आ रही है।

विधानसभा सत्र के पांचवें दिन सदन में जमकर हंगामा

नई तालीम से नया तालिबान मत खड़ा करो: बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा

- जल जीवन मिशन में गड़बड़ी का आरोप, विपक्ष ने सरकार को घेरा
- कांग्रेस का आरोप- मदरसों की बात कर नर्सिंग घोटाले से ध्यान भटका रही सरकार

भोपाल (नप्र) मध्य प्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र के पांचवां दिन शुक्रवार भी हंगामे की भेंट चढ़ा। लेकिन खास बात यह रही कि आज विपक्षी नेताओं ने नहीं, सरकार को अपने ही पार्टी भाजपा के विधायक और पूर्व मंत्री से आरोप झेलने पड़ गए। प्रश्नकाल के दौरान पूर्व मंत्री प्रभुराम चौधरी ने केंद्र सरकार की जल जीवन मिशन में गड़बड़ी का आरोप लगाया। इसके बाद जैसे विपक्ष को तो मुद्दा ही मिल गया। कई कांग्रेसी विधायकों ने भी जल जीवन मिशन में घोटाला का आरोप लगा दिया। ऐसे में सरकार को जवाब देना मुश्किल हो गया और सदन में असहज स्थिति निर्मित हो गई।

बजट सत्र के पांचवें दिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति और गैर मान्यता प्राप्त मदरसों में शिक्षा के मुद्दे भी उठे। बीजेपी विधायक अभिलाष पांडेय ने संविधान के अनुच्छेद 30 को खत्म करने के लिए अशासकीय संकल्प पेश किया। यह मदरसों जैसी अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना और प्रबंधन का अधिकार समाप्त करने से जुड़ा है। सरकार से इस पर रिव्यू की मांग की गई।

इस पर बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा, नई तालीम से नया तालिबान खड़ा मत करो। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत सबको शिक्षा और रोजगार मिले। मदरसा यदि मजहब की बात करता है, आतंकवादी गतिविधियों में शामिल होता है तो यह दुर्भाग्य है। मदरसा यदि डॉक्टर-इंजीनियर देता है तो समझ में आता है। एक अकेले उर्दू के बलबूते पर सभी शिक्षाएं नहीं मिल सकती है।इस पर कांग्रेस विधायक आतिफ अकील ने कहा- नर्सिंग घोटाले से ध्यान भटकाने के लिए सत्ता पक्ष के विधायक मदरसों का मुद्दा उठा रहे हैं।

मध्यप्रदेश विधानसभा में बजट सत्र के पांचवें दिन शुक्रवार को हंगामा हो गया। संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने प्रस्ताव रखा कि विभागवार अनुदान मांगों पर चर्चा करने की बजाय एक साथ सभी विभागों की अनुदान मांगों पर चर्चा की जाए। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने इसका विरोध किया।

अध्यक्ष ने बहुमत के आधार पर एक साथ चर्चा करने का फैसला लिया। इस पर कांग्रेसी सदन में विरोध करने लगे और शोर शराबे की स्थिति बन गई। इससे पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति और गैर मान्यता प्राप्त मदरसों में शिक्षा के मुद्दे भी उठे।विपक्ष ने जल जीवन मिशन में करप्शन का आरोप लगाकर सदन से वॉक आउट किया।

पान मसाला दुकानों का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य, विधेयक पारित

विधानसभा में मप्र माल एवं सेवा कर संशोधन विधेयक 2024 पारित किया गया। इस एक्ट में पान मसाला की दुकानों का रजिस्ट्रेशन भी अनिवार्य किया गया है। ऐसा नहीं करने पर रू. 1,00,000 की पेनल्टी तय की गई है।

मध्यप्रदेश खुले नलकूप में इंसानों के गिरने से होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम एवं सुरक्षा विधेयक 2024 सर्व सम्मति से पारित किया गया। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विधेयक पेश किया। इस पर विधायक कैलाश कुशवाहा ने सुझाव दिया। इसके बाद प्रस्ताव पारित किया गया।

एक साथ अनुदान मांगों पर चर्चा के प्रस्ताव पर विपक्ष का हंगामा

सदन में सभी विधेयक पारित होने के बाद अनुदान मांगों पर चर्चा के दौरान हंगामा हो गया। संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने प्रस्ताव रखा कि विभागवार अनुदान मांगों पर चर्चा करने की बजाय एक साथ सभी विभागों की अनुदान मांगों पर चर्चा की जाए। इस पर उन्होंने नेता प्रतिपक्ष की भी सहमति चाही।

इसका नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने विरोध किया। इसके बाद संसदीय कार्य मंत्री ने अध्यक्ष के समक्ष प्रस्ताव रखा। अध्यक्ष ने बहुमत के आधार पर एक साथ चर्चा करने का फैसला लिया। इस पर कांग्रेसी सदन में विरोध करने लगे और शोर शराबे की स्थिति बन गई।

एक ओर वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा शोर शराबे के बीच विभागीय अनुदान मांगों को पारित करने जाने का प्रस्ताव पर रहे थे। दूसरी ओर सदन में कांग्रेसी हंगामा करते रहे।

मरकाम बोले-किसी के घर जाता हूं तो थाली धोनी पड़ती है

गोवंश वध विधेयक पर हंगामे के बाद मरकाम ने पहले तो क्षमा मांगी लेकिन बाद में कहा कि वह चार बार के विधायक हैं। मंत्री रह चुके हैं लेकिन आज भी अगर वह किसी के घर जाते हैं और भोजन करते हैं तो उन्हें थाली धोने पड़ती है। इस पर सदन में फिर हंगामा होने लगा।

गोवंश वध विधेयक पर सदन में हंगामा

गोवंश वध प्रतिषेध संशोधन अधिनियम पर चर्चा करते हुए विधायक ओंकार सिंह मरकाम ने कहा कि सदन के बाहर सभी धर्मों की एक बैठक बुलाई जाए और गौ माता के महत्व को समझाया जाए। गौ माता की मृत्यु पर उन्हें खुले में छोड़ दिया जाता है। गाय के चमड़े को निकाल कर उससे ढोलक बनाई जाती है, वही ढोलक मंदिर में बजती है। इस बयान पर भाजपा विधायकों ने विरोध शुरू कर दिया और सदन में बहस की स्थिति बन गई।

अभिलाष पांडे बोले- अल्पसंख्यक समुदाय को समान शिक्षा दिलाने पेश किया अशासकीय संकल्प

भाजपा विधायक अभिलाष पांडे ने मीडिया से कहा- मैं चाहता हूं कि अल्पसंख्यक बच्चे भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ पढ़ाई करें। उनका भविष्य उज्जवल बने, इस दिशा में मेरा ये कदम है।

सागर में 250 लोगों को उल्टी-दस्त, 1 की मौत

70 को अस्पताल में कराया भर्ती

सागर (नप्र)। सागर में उल्टी-दस्त से एक युवक की मौत हो गई। करीब 250 लोग बीमार हैं। 70 से अधिक लोग जिला अस्पताल, मेडिकल कालेज और निजी अस्पताल में भर्ती हैं। मामला मेहर गांव का है। प्रशासन ने स्वास्थ्य विभाग की टीम भेजी है। गांव में ही तीन स्वास्थ्य केंद्र बनाए गए हैं। पानी का सैंपल लेने के बाद बोरिंग बंद कर दिया है।

मेहर गांव के आदिवासी मोहल्ला, रविदास वार्ड और ऊपर टोला क्षेत्र में रहने वाले लोगों को अचानक उल्टी-दस्त की शिकायत हुई थी। देखते ही देखते मरीजों की संख्या बढ़ने लगी। कुछ लोगों की हालत बिगड़ गई, जिसके बाद परिवार के लोग मरीजों को अस्पताल लेकर पहुंचे। 40 वर्षीय लल्लन बंसल की मौत हो गई। बीमार लोगों में 3 से 8 साल तक के बच्चे और 60 साल तक के बुजुर्ग शामिल हैं। जिला अस्पताल में करीब 16 मरीजों को भर्ती कराया गया है, जिसमें 8 बच्चे हैं।

डायरिया फैलने का अंदेशा- ग्रामीणों ने बताया कि गांव में सरकारी बोर से पीने का पानी भरते हैं। कई वर्षों से इसी एक बोर का पानी पी रहे हैं। बुधवार रात से अचानक लोगों की तबीयत बिगड़ने लगी, लेकिन लोगों ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। गुरुवार को स्थिति बिगड़ गई। मरीजों की संख्या बढ़ी तो उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। मामला सामने आते ही मेहर गांव में 5 कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर तैनात किए गए हैं। बांदरी अस्पताल में तीन शिफ्टों में डॉक्टरों की ड्यूटी लगाई गई है।

मरीजों का इलाज किया जा रहा है- जिला अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात डॉ. अजय यादव ने बताया कि 16 मरीजों को यहां भर्ती कराया गया है। सभी मरीजों का इलाज किया जा रहा है। हालत स्थिर है। पानी और खानपान के कारण उल्टी-दस्त की शिकायत हो सकती है। मरीजों की सैंपलिंग की जा रही है। रिपोर्ट आने के बाद ही लोगों की तबीयत खराब होने का कारण सामने आ सकेगा।

जिला अस्पताल के आरएमओ डॉ. अभिषेक ठाकुर ने बताया कि दूषित पानी पीने के कारण मरीजों को पेट में संक्रमण फैलने की आशंका है। सभी मरीजों की हालत स्थिर है। इलाज किया जा रहा है। मरीजों की निगरानी के लिए अस्पताल में 4 डॉक्टरों की टीम तैनात की गई है।

कलेक्टर पर भड़के केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया

गुना में लोगों से मिलने में परेशानी पर नाराज ; बोले-सिस्टम नहीं बनाया, ऐसा नहीं चलेगा

गुना (नप्र)। गुना दौरे पर आए केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया कलेक्टर पर भड़क उठे। वे सर्किट हाउस में लोगों से मिलने की व्यवस्था ठीक नहीं होने के कारण नाराज हो गए।

उन्होंने कलेक्टर से कहा- जब पहले ही कहा गया था व्यवस्था बनाने, तो क्यों नहीं बनाई गई। ये नहीं चलेगा। जब मैंने कहा है एक सिस्टम बनाने के लिए, बना के रखिएगा अगली बार से। नागरिकों से मिलने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। आगे से इसका ध्यान रखें।

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया गुरुवार देर रात दो दिवसीय दौरे पर गुना पहुंचे। यहां सर्किट हाउस में उन्होंने रात्रि विश्राम किया। शुक्रवार सुबह उन्होंने नागरिकों से मुलाकात की। इस दौरान उनकी समस्याएं सुनीं और उनके आवेदन लिए। सैकड़ों की संख्या में लोग अपनी समस्या लेकर पहुंचे। लोगों से मिलने के बाद सिंधिया बमोरी के लिए रवाना हो गए।

सर्किट हाउस में प्रशासन ने कर दी बैरिकेडिंग

लोगों से मिलने के लिए सर्किट हाउस में इस बार चाक चौबंद व्यवस्था की गई थी। अंदर की सड़क पर बैरिकेडिंग की गई थी। इसके एक तरफ से होकर लोगों को पीछे खुले मैदान में जाने की अनुमति थी। वहीं दूसरी ओर से केवल जनप्रतिनिधियों और पार्टी पदाधिकारियों को जाने दिया गया। पहली बार इतनी दुरुस्त व्यवस्था सर्किट हाउस में देखने को मिली।

हालांकि, इस व्यवस्था को पार्टी के कार्यकर्ताओं ने ही ध्वस्त कर दिया। वह प्रशासन की व्यवस्था को तोड़ते हुए दूसरी तरफ से घुस गए। जबकि गुरुवार रात में ही प्रशासन ने व्यवस्था बनाई थी। लेकिन खुद कार्यकर्ताओं ने ही पूरी व्यवस्था को तोड़ दिया, जिसके कारण आम नागरिकों को परेशानी झेलना पड़ी।

सिंधिया से नहीं मिल पा रहे थे सर्किट हाउस पहुंचे लोग

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जब नागरिकों से मिलने पहुंचे तो सब इधर-उधर खड़े थे। वहीं सिंधिया को कार्यकर्ताओं ने ही घेर लिया, जिस वजह से वह नागरिकों से मिल ही नहीं पा रहे थे। सिंधिया ने कलेक्टर से नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा- अगली बार से बड़ा पंडाल लगाइए। नागरिकों से मिलने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए।

पहले भी लगाई थी फटकार

बता दें कि केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया इससे पहले भी कलेक्टर, एसपी को फटकार लगा चुके हैं। 20 जनवरी को केंद्रीय मंत्री गुना के दौरे पर थे। लक्ष्मीगंज में आमसभा आयोजित की गई थी। भाषण के दौरान सिंधिया ने कलेक्टर, स्कको देखा तो वे मंच पर नहीं थे। इसी बात पर सिंधिया नाराज हो गए और उन्होंने मंच से ही कलेक्टर और एसपी को फटकार लगाई थी। उन्होंने भरे मंच से कहा था - इधर मंच पर रहो, नीचे नहीं जाने का.. एसपी कहां हैं? बुलाओ एसपी को.. मंच पर खड़े रहो दोनों..।

गैस राहत अस्पतालों और औषधालयों में ओपीडी खुलने का समय तय

गैस राहत अस्पतालों में सुबह 8 से 1 बजे तक एवं शाम 5 से 6 बजे तक ओपीडी खुली रहेगी

भोपाल(नप्र)। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह के आदेश पर गैस राहत एवं पुनर्वास संचालनालय के अधीन गैस राहत अस्पतालों एवं औषधालयों में बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) खुली रहने का समय तय कर दिया गया है। सभी गैस राहत अस्पतालों में सुबह 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक एवं शाम 5 बजे से 6 बजे तक ओपीडी खुली रहेगी। इसी तरह गैस राहत के सभी औषधालयों में सुबह 9 बजे से अपरान्ह 4 बजे तक ओपीडी खुली रहेगी। गैस राहत संचालनालय द्वारा सभी गैस राहत अस्पतालों एवं औषधालयों को इस आदेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये हैं।

सहायक संचालक, गैस राहत एवं पुनर्वास संचालनालय, भोपाल ने बताया कि संचालक, कमला नेहरू चिकित्सालय, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, गैस राहत, भोपाल, अधीक्षक जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय, इंदिरा गांधी महिला एवं बाल चिकित्सालय, अधीक्षक कमला नेहरू चिकित्सालय, अधीक्षक, पल्मोनरी मेडिसिन सेंटर, अधीक्षक, मास्टर लाल सिंह चिकित्सालय, अधीक्षक, शाकिर अली खान चिकित्सालय, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, बाग उमराव दूल्हा औषधालय, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, रूकमा बाई औषधालय बरखेड़ी, भोपाल, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, सिविल डिस्पेंसरी, अशोका गार्डन, भोपाल, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, के.एन.प्रधान औषधालय, जहांगीराबाद, भोपाल, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, माँ कर्मा देवी औषधालय, करोंद।

महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण एवं आर्थिक स्वावलम्बन की ओर बढ़ते मजबूत कदम

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण तथा उनके आर्थिक स्वावलम्बन के लिए बालिकाओं के जन्म से लेकर उनके सम्पूर्ण जीवन के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं और कार्यक्रम लागू किए जा रहे है। चाहे वह नौनिहालों के सुनहरे भविष्य बनाने के लिए सक्षम आंगनवाड़ी एवं पोषण 2.0 योजना हो, बेटियों के जन्म से उन्हें लखपति बनाने की लाड़ली लक्ष्मी योजना या फिर बहन-बेटियों को अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं को पूरा करने में न सिर्फ समर्थ हुई बल्कि बैंकिंग प्रणाली से जुड़ने और वित्तीय जागरूकता का संयम करती लाड़ली बहना योजना हो, सभी योजनाओं ने महिलाओं को सशक्त कर अपने परिवार और समाज में एक अलग पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की। इसकी निंतरता को बरकरार रखने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वर्ष 2024-25 के लिए 26 हजार 560 करोड़ रूपये का बजट प्रावधान किया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 81 प्रतिशत अधिक है। इस वर्ष बाल बजट में 70 हजार 447 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। जो पिछले वर्ष की तुलना में 12 प्रतिशत अधिक है।

महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता में रखते हुए प्रदेश में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना को निरंतर जारी रखा गया है। योजना में इस वर्ष 18 हजार 984 करोड़ का प्रावधान किया गया है। योजना में 21 से 60 वर्ष की पात्र महिलाओं को प्रतिमाह 1250 रूपये की राशि उनके बैंक खातों में अंतरित की जा रही है।

इस वित्तीय वर्ष 2024-25 में (सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0) के तहत आंगनवाड़ी सेवाएं के लिए 3469 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। इसमें मुख्य- 6 सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। पूरक पोषण आहार जिसमें 6 माह से 6 वर्ष आयु के बच्चों, गर्भवती व धात्री माताओं तथा किशारी बालिकाओं को वर्ष में कम से कम 30 दिन पूरक पोषण आहार प्रदाय किया जाता है। ग्रोथ मॉनिटरिंग एवं टीकाकरण के अन्तर्गत माह में निर्धारित 10 दिवसों में 6 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों का ग्रोथ मॉनिटरिंग एवं स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से माह में एक दिन बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया जाता है। आंगनवाड़ी सेवाओं में शाला पूर्व शिक्षा के तहत 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के प्रतिदिन आंगनवाड़ी आने वाले बच्चों को शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भाषाई और सौंदर्य बोध की शिक्षा दी जाती है।

पोषण स्वास्थ्य शिक्षा के तहत आंगनवाड़ी कार्यकर्ता स्वंय एवं आशा तथा स्वास्थ्य कार्यकर्ता के सहयोग से केन्द्र स्तर पर सामूहिक एवं गृह भेंट कर हितग्राहियों के स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं संतुलित भोजन आदि के बारे में परामर्श दिया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह टीकाकरण दिवस पर नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर ए.एन.एम., सी.एच.ओ. तथा आर.बी.एस. के दल द्वारा महिलाओं तथा बच्चों की स्वास्थ्य जाँच एवं आवश्यक सलाह दिया जाता है। स्वास्थ्य जाँच के आधार पर जरूरी होने पर महिलाओं एवं बच्चों को स्वास्थ्य केन्द्र अथवा पोषण पुर्नवास केन्द्र उपचार के लिए भेजा जाता है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत इस वित्तीय वर्ष में 350 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को मजदूरी की हानि की आंशिक क्षतिपूर्ति के रूप में नकद प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए प्रथम प्रसव पर 5 हजार रूपये दो किश्तों में तथा द्वितीय प्रसव पर बालिका के जन्म होने पर 6 हजार रूपये का लाभ एक किश्त में किया जाता है। योजना के प्रारंभ से अब तक 40 लाख से अधिक लाभार्थियों को पंजीकृत कर 1663 करोड़ रूपये का भुगतान किया जा चुका है। मार्च 2024 तक 6,31,071 लक्ष्य के विरूद्ध 6,24,588 लाभार्थियों को पंजीकृत किया गया है। प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना के प्रारंभ से वर्ष 2022-23 तक निरंतर 5 वर्षों से मध्यप्रदेश इस योजना के क्रियान्वयन में देश में प्रथम स्थान पर है।